IJIRSET
International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2320-6710

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 11, Issue 12, December 2022

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 8.118

9940 572 462 | 6381 907 438 | ijirset@gmail.com | www.ijirset.com

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 12, December 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1112035 |

प्लेटो का साम्यवाद सिद्धांत: वर्तमान साम्यवाद के साथ एक तुलनात्मक विवेचन

Dr. Rajesh Kumar Chauhan

Associate Professor, Dept. of Political Science, Govt. College, Bundi, Rajasthan, India

सार

प्लेटो ने अपने आदर्श में न्याय की प्राप्ति के लिए जो दो तरीके अपनाए हैं, उनमें से साम्यवाद का निषेधात्मक व भौतिक तरीका भी शामिल है। प्लेटो का मानना है कि आदर्श राज्य की स्थापना में तीन बाधाएँ - अज्ञान, निजी सम्पत्ति व निजी परिवार है। इन बाधाओं को दूर करने के लिए प्लेटो शिक्षा का सिद्धांत व साम्यवादी व्यवस्था का प्रावधान करता है। अज्ञान को तो शिक्षा द्वारा दूर किया जा सकता है लेकिन निजी सम्पत्ति परिवार की संस्था का लोप करने के लिए वह जिस व्यवस्था का समर्थन करता है, वह साम्यवाद के नाम से जानी जाती है। प्लेटो का साम्यवाद राजनीतिक सत्ता तथा आर्थिक लोलुपता के सम्मिश्रण से उत्पन्न बुराई को दूर करता है। प्लेटो साम्यवाद के द्वारा अभिभावक या संरक्षक वर्ग को सम्पत्ति तथा पारिवारिक जीवन की चिन्ताओं से मुक्त रखना चाहता है। इस सिद्धांत को प्रतिपादित करने के पीछे प्लेटो का उद्देश्य शिक्षा के माध्यम से नि:स्वार्थी शासकों को तैयार करने के बाद भी सांसारिक आकर्षणों और चारित्रिक दुर्बलताओं के शिकार होकर अपने कर्त्तव्य-पथ से भटकने को रोकना है। प्लेटो साम्यवाद को समाज का आध्यात्मिक उत्थान करने का नकारात्मक मार्ग कहता है। वह इसे व्यक्ति के उत्थान का भौतिक साधन मानता है। प्लेटो का मानना है कि कांचन और कामिनी का मोह संरक्षक वर्ग को धनलोलुप, स्वार्थी और आस्क्त बना देता है। अत: संरक्षक वर्ग को अपने कर्त्तव्य पथ से विचलित होने से रोकना अति आवश्यक है। इसके लिए वह सम्पत्ति और पत्नियों का साम्यवाद का सिद्धांत पेश करता है।

परिचय

प्लेटो का मानना है कि सैनिक और शासकों के लिए आदर्श राज्य में न तो अपना परिवार या घर होना चाहिए न ही निजी सम्पत्ति। अपने इस उद्देश्य या विचार को सकारात्मक रूप देने के लिए प्लेटो ने जिस विस्तृत योजना का निर्माण किया है, उसे ही प्लेटो का साम्यवाद या प्लेटो का साम्यवादी सिद्धांत कहा जाता है। प्लेटो का कहना है कि संरक्षक या अभिभावक वर्ग के सदस्य विवाह करने और निजी परिवार बसाने के अधिकार से वंचित रहेंगे। पतियों, पत्नियों तथा बच्चों पर एक व्यक्ति या परिवार का अधिकार न होकर, सम्पूर्ण समाज या राज्य का अधिकार रहेगा। सभी को उसमें साँझा अधिकार प्राप्त होगा। अच्छी संतान या योग्य सन्तान पैदा करने के लिए योग्य पुरुष व स्त्री का संयोग कराया जाएगा, संरक्षक वर्ग के सदस्य निजी सम्पत्ति से भी वंचित रखे गए हैं। प्लेटो के अनुसार समस्त सम्पत्ति (चल व अचल) राज्य के नियन्त्रण में ही रहेगी। प्लेटो की योजना के अनुसार सभी सैनिकों व शासकों को (अभिभावक या संरक्षक वर्ग) बैरकों में रखना होगा और उन्हें साथ-साथ भोजन करना होगा। उत्पादक वर्ग अपनी पैदावार का कुछ हिस्सा उन्हें दे देगा ताकि उनकी अनिवार्य आवश्यकताएँ पूरी हो सकें। सामूहिकता की जीवन-व्यवस्था को प्लेटो ने पत्नियों व सम्पत्ति को साम्यवाद का नाम दिया है।[1]

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 12, December 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1112035 |

प्लेटो की साम्यवादी विचारधारा कोई नवीन तथा मौलिक विचारधारा नहीं है। प्लेटो से पहले भी यूनान में साम्यवाद के बीज विद्यमान थे। एथेन्स में 5 वीं शताब्दी ई. पूर्व में ही साम्यवाद के दर्शन होते हैं। एथेन्स में राज्य का व्यक्तिगत सम्पत्ति पर नियन्त्रण था। स्पार्टा में स्त्रियों को राज्य हित की दृष्टि से शासन संचालन का भार सौंप दिया जाता था, बालकों को 7 वर्ष की आयु के बाद राज्य को सौंप दिया जाता था। स्पार्टा में सार्वजनिक जलपान गृह तथा भोजनालयों की व्यवस्था थी। स्पार्टा के नागरिक अपनी उपज का एक भाग सामूहिक भोजनालयों में भेजते थे। क्रीट नामक नगर में सामूहिक खेती की जाती थी। एथेन्स के नगर में भी राज्य की अपनी जंगलात व खानें थीं। एथेन्स में पाइथोगोरस का मत था- "मित्रों की सम्पत्ति पर समान रूप से सबका अधिकार है।" यह साम्यवादी विचार थां यूरीपाइडीज नामक विचारक ने भी प्लेटो से पहले ही स्त्रियों के साम्यवाद के सिद्धांत का प्रतिपादन कर दिया था, हिरोडोटस ने अर्गाथीसियन्ज की चर्चा में नारियों की साम्यवादी प्रथा का वर्णन किया है।प्लेटो के साम्यवादी विचारों पर तत्कालीन परिस्थितियों का गहरा प्रभाव पड़ा है। प्लेटो के काल में सम्पत्तिशालियों के हित में शासन का संचालन होता था, शोषण प्रथा प्रचलित थी एवं आर्थिक तत्त्व राजनीतिक वातावरण पर प्रभावी थे। प्लेटो के युग में महिलाओं की दशा काफी दयनीय थी। सामाजिक क्षेत्र में उनकी भूमिका नगण्य थी। उन्हें चारदीवारी तक ही सीमित कर दिया गया था। उनका कर्त्तव्य पति की कामवासना की तृप्ति, संतानोत्पत्ति व उनके पालन-पोषण तक ही सीमित था। प्लेटो नारियों की दुर्दशा से चिन्तित था। इसलिए उसने नारी उत्थान के लिए पत्नियों के साम्यवाद का सिद्धांत पेश किया।

प्लेटो की सम्पत्ति व पत्नियों से सम्बन्धित साम्यवाद की विशेषताएँ हैं :-

1. **अर्ध-साम्यवाद :** प्लेटो की साम्यवादी व्यवस्था समाज के केवल एक वर्ग (शासक वर्ग) पर लागू होती है; उत्पादक वर्ग पर नहीं। इसमें संरक्षक वर्ग सम्पत्ति और कुटुम्ब से अछूता रहेगा, उत्पादक वर्ग को अपनी सम्पत्ति व परिवार रहेंगे। इसलिए इसे अर्ध-साम्यवाद की संज्ञा दी जाती है।
2. **न्याय की पूरक व्यवस्था :** प्लेटो के न्याय सिद्धांत का प्रमुख उद्देश्य आदर्श राज्य की स्थापना करना है। प्लेटो ने न्याय सिद्धांत की व्यावहारिकता के लिए दो साधनों - शिक्षा एवं साम्यवाद को अपनाया है। शिक्षा योजना न्याय की प्राप्ति का आध्यात्मिक व सकारात्मक साधन है; वहीं साम्यवादी योजना न्याय की प्राप्ति का भौतिक व नकारात्मक तरीका है।
3. **अभिजातवादी :** प्लेटो केवल उच्च वर्ग को ही साम्यवादी व्यवस्था के अन्तर्गत रखता है। यह व्यवस्था केवल शासक वर्ग के लिए है, साम्यवाद का प्रयोजन केवल थोड़े शासकों के जीवन को नियन्त्रित करना है ताकि वे सामाजिक हित के कार्य निर्बाध रूप से पूरे कर सकें। अत: प्लेटो का साम्यवाद 'बौद्धिक अल्पतन्त्र' के शासन की स्थापना करता है।
4. **राजनीतिक :** प्लेटो का साम्यवाद आर्थिक न होकर राजनीतिक है। प्लेटो के साम्यवाद का उद्देश्य आर्थिक असमानता को दूर करना नहीं था अपितु तत्कालीन राजनीतिक दोषों को दूर करना था। प्लेटो चाहता था कि शासन की बागडोर दार्शनिक शासक के हाथों में हो।
5. **तपस्यात्मक :** प्लेटो ने शासक तथा सैनिक वर्ग को सम्पत्ति तथा परिवार का मोह त्यागकर संन्यासी बनने को कहा है। वह व्यक्तिगत सुख की अपेक्षा समाज के सुख को महत्त्व देता है। प्लेटो के शासक वर्ग का जीवन त्याग का है, भौतिक सुखों का नहीं। प्लेटो का साम्यवाद साधुवादी है जिसमें शासक वर्ग समस्त आर्थिक सुख-सुविधाओं का त्याग करता है।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 12, December 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1112035 |

6. **आर्थिक ढाँचे में परिवर्तन नहीं:** प्लेटो का साम्यवाद उत्पादक वर्ग को इस व्यवस्था से बाहर रखता है। उत्पादक वर्ग अपनी सम्पत्ति का स्वामी बना रहता है। प्लेटो अपने साम्यवाद में आर्थिक ढाँचे को यथावत् बनाए रखना चाहता है।[2]
7. **राज्य की एकता की रक्षक व्यवस्था :** प्लेटो राज्य में एकता स्थापित करने के लिए संरक्षक वर्ग के लिए साम्यवादी व्यवस्था की योजना प्रस्तुत करता है। प्लेटो की साम्यवादी योजना अभिभावक वर्ग को कंचन और कामिनी के मोह से दूर रखकर सार्वजनिक हित में शासन करने के लिए प्रेरित करेगी। स्त्रियों को भी राज्य की सेवा का सक्रिय अवसर मिलेगा, इससे राज्य की एकता में वृद्धि होगी।

विचार-विमर्श

प्लेटो का साम्यवाद दो तरह का है :-

1. सम्पत्ति का साम्यवाद (Communism of Property)
2. पत्नियों का साम्यवाद (Communism of Wives)

1. सम्पति का साम्यवाद

प्लेटो ने सम्पत्ति के साम्यवाद के अन्तर्गत यह व्यवस्था की है कि अभिभावक वर्ग के लिए अर्थात शासक एवं सैनिक वर्ग के लिए निजी सम्पत्ति निषिद्ध होगी; उनकी कोई निजी भूमि या निजी सम्पत्ति नहीं होगी। उनका निजी घर भी नहीं होगा अपितु वे राज्य द्वारा निर्मित बैरकों में रहेंगे, उनका आवास सभी के लिए खुला रहेगा जिसमें कोई भी कभी आ सके। राज्य के उत्पादकों द्वारा उनको इतनी जीवन वृत्ति दी जाएगी कि वह उनके लिए कम न पड़े और न ही निजी संग्रह के लिए बचे। वे सामूहिक रूप से मेजों पर भोजन करेंगे। उन्हें सोने-चाँदी के सामान का स्पर्श करना निषिद्ध होगा। चल-अचल सम्पित्त्व से विरक्त होकर वे देश की सेवा और रक्षा करेंगे। इसी में उनकी मुक्ति है और ऐसा करने से वे राज्य के रक्षक बन सकेंगे। किन्तु जब वे कभी भी भूमि, घर और धन का उपार्जन करेंगे तब वे अन्य नगरवासियों से घृणा करने लग जाएंगे। वे प्रपंच करेंगे; द्वेष करेंगे तथा राज्य के रक्षक बनने की बजाय उसके शत्रु और निरंकुश व्यक्ति बन जाएंगे। लोग उनसे घृणा करेंगे और वे लोगों से। वे अपने सार्वजनिक हित के धर्म से पदच्युत हो जाएंगे। इस प्रकार वे राष्ट्र के सर्वनाश का ही मार्ग प्रशस्त करेंगे। प्लेटो के सम्पत्ति विषयक साम्यवाद की कुछ विशेषताएँ हैं :-

1. यह साम्यवाद सभी नागरिकों के लिए नहीं, बल्कि केवल शासक और सैनिक वर्ग के लिए है। उसका उद्देश्य यद्यपि सम्पूर्ण समाज का कल्याण है किन्तु सम्पूर्ण समाज द्वारा व्यवहार में नहीं लिया जाता है।
2. प्लेटो का सम्पत्ति सम्बन्धी साम्यवाद भोग का नहीं बल्कि त्याग का मार्ग है। यह समाज के शासक वर्ग की कंचन और कामिनी का मोह छोड़कर जन-कल्याण में लगे रहने के लिए प्रेरित करता है। फोस्टर के शब्दों में- "प्लेटो के संरक्षक वर्ग को सामूहिक रूप से सम्पत्ति का स्वामित्व ग्रहण करना नहीं, वरन् इसका त्याग करना है।"
3. इसका उद्देश्य राजनीतिक है, आर्थिक नहीं। वर्तमान साम्यवाद की तरह यह आर्थिक विषमता को दूर न करके राजनीतिक दोषों को ही दूर करता है।[3]

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 12, December 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1112035 |

सम्पत्ति के साम्यवाद के पक्ष में तर्क - प्लेटो ने निम्न आधारों पर सम्पत्ति को साम्यवाद का समर्थन किया है :-

1. **मनोवैज्ञानिक आधार :** प्लेटो के अनुसार शासक और सैनिक आत्मा के विवेक और साहस तत्त्व का क्रमश: प्रतिनिधित्व करते हैं। इन तत्त्वों से प्रेरित होकर वे अपने निश्चित प्रतिनिधित्व करते हैं। इन तत्त्वों से प्रेरित होकर वे अपने निश्चित उत्तरदायित्वों को निभाना चाहते हैं, तो उन्हें क्षुधारूपी निकृष्ट तत्त्व के जाल में नहीं फँसना चाहिए। निजी सम्पत्ति की व्यवस्था मनुष्य की उदार प्रवृत्ति पर विपरीत प्रभाव डालती है और व्यक्ति को स्वार्थी बनाती है। यदि दार्शनिक शासक व सैनिक वर्ग के लिए निजी सम्पत्ति की व्यवस्था स्वीकार की जाएगी तो उनमे भी स्वार्थ की वृद्धि होगी और क्रमश: उनका विवेक और साहस कुण्ठित हो जाएगा। सेबाइन के अनुसार- "शासकों को लालच से मुक्ति दिलाने का एक ही उपाय है कि उन्हें किसी चीज को अपना या निजी कहने के अधिकार से वंचित कर दिया जाए और यह उपाय प्लेटो की सम्पत्ति की व्यवस्था में ही सम्भव है।" अत: प्लेटो का सम्पत्ति का साम्यवाद आदर्श राज्य के लिए मनोवैज्ञानिक आवश्यक शर्त है।
2. **राजनीतिक और व्यावहारिक आधार** : प्लेटो का सम्पत्ति का सिद्धांत दो आधारों पर राजनीतिक है। एक तो यह सिर्फ शासक व सैनिक वर्ग पर लागू होता है, उत्पादक वर्ग पर नहीं। शासक वर्ग तक सीमित होने के कारण यह राजनीतिक है। दूसरा यह है कि शासन के ऊपर धन का बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। इस बुराई को दूर करने के लिए प्लेटो अभिभावक वर्ग को सम्पत्ति के अधिकार से मुक्त करता है। प्लेटो के अनुसार जब राजसत्ता तथा निजी सम्पत्ति का संयोग हो जाता है तो राज्य का पतन हो जाता है। शासक वर्ग धन की लालसा के लिए सत्ता का दुरुपयोग करता है। अत: प्लेटो राजनीतिक अर्थ शक्ति के केन्द्रीयकरण को समाप्त करके शासक वर्ग को केवल राजनीतिक शक्ति देने के पक्ष में है। प्लेटो की यही व्यावहारिक मान्यता भी है और राजनीतिक अनिवार्यता। यदि शासकों को व्यक्तिगत सम्पत्ति की छूट दी जाए तो शासक वर्ग भ्रष्ट होकर आदर्श राज्य को धनिकतन्त्र में बदल देगा। इस सम्बन्ध में सेबाइन ने लिखा है- "जहाँ तक सैनिकों व शासकों का सम्बन्ध है, प्लेटो को शासन के ऊपर धन के बुरे प्रभावों के बारे में इतना दृढ़ विश्वास था कि इस दोष को मिटाने के लिए उसे स्वयं सम्पत्ति के नाश के अतिरिक्त कोई रास्ता दिखाई नहीं दिया।"
3. **नैतिक आधार :** प्लेटो इस बात में विश्वास नहीं करता कि व्यक्ति का अस्तित्व मात्र स्वार्थसिद्धि के लिए है, उसके अनुसार कर्त्तव्यों का पूर्ण निष्ठा के साथ सम्पादन कर, अपने योग्य कार्य-क्षेत्र की सीमा में रहकर एवं समष्टि के एक अभिन्न अंग के रूप में अपने अस्तित्व को स्वीकार करके ही व्यक्ति अपने जीवन को सार्थक बना सकता है। प्लेटो का सिद्धांत व्यक्ति को विवेकी व निस्वार्थी बनाकर कत्तव्यों का सम्पादन करने पर जोर देता है।
4. **दार्शनिक आधार:** प्लेटो का सम्पत्ति का साम्यवादी सिद्धांत दार्शनिक आधार पर भी उचित है। प्लेटो ने इसे कार्य विशिष्टीकरण के आधार पर सही ठहराया है। प्लेटो का कहना है कि जिन लोगों के ऊपर शासन का भार है, उनकी जीवन-शैली विशिष्ट होनी चाहिए। यह शैली कार्य विशेष के आधार पर ही होनी चाहिए। शासक वर्ग को उच्चादर्शों को प्राप्त करने के लिए सांसारिक प्रलोभनों से मुक्त होना चाहिए। प्लेटो का कहना है कि जिन व्यक्तियों पर शासन का भार है, उन्हें अपने कार्य में बाँधा या विघ्न उत्पन्न करने वाले सभी सांसारिक तत्त्व से उसी प्रकार बचना चाहिए जिस प्रकार ईश्वर की भक्ति में लगे एक साधक या संन्यासी को घर, पानी, बच्चे, सम्पत्ति या सांसारिक मोह-माया से दूर रहना चाहिए।[4]

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 12, December 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1112035 |

सम्पत्ति के साम्यवाद के उद्देश्य - प्लेटो की सम्पत्ति की योजना के प्रमुख उद्देश्य है :-

1. **सार्वजनिक हित के लिए :** प्लेटो का दार्शनिक राजा सार्वजनिक हित में शासन करता है। वह सैनिक वर्ग व उत्पादक वर्ग पर सार्वजनिक हित के ही सन्दर्भ में कठोर नियन्त्रण रखता है।
2. **अभिभावक वर्ग के लिए कार्यकुशलता** : सम्पत्ति के साम्यवाद की योजना सैनिक वर्ग तथा शासक वर्ग को आर्थिक चिन्ताओं से मुक्त करती है और वह अपना समस्त समय व ध्यान अपनी कार्यकुशलता की वृद्धि में लगा सकते हैं।
3. **राज्य की एकता के लिए :** जब शासक वर्ग के पास निजी सम्पत्ति होती है तो शासक वर्ग में सम्पत्ति को लेकर आपसी प्रतियोगिता व ईर्ष्या भी होती है और इससे राज्य को एकता को भय उत्पन्न हो जाता है। किन्तु सम्पत्ति को साम्यवादी योजना शासक वर्ग में इस प्रकार का भय उत्पन्न नहीं होने देती और यह राज्य की एकता की रक्षक सिद्ध होती है।
4. **सामाजिक भ्रातृभाव के लिए :** प्लेटो का सम्पत्ति का साम्यवाद संरक्षक वर्ग को साधुवादी प्रवृत्ति अपनाने की सलाह देता है। सम्पत्ति पर किसी एक का अधिकार न होकर सम्पूर्ण समाज का अधिकार होगा। इससे किसी के पास कम या अधिक सम्पत्ति संचय करने की भावना पैदा नहीं होगी। सम्पत्ति का साम्यवाद लोगों में भ्रातृभाव की भावना को जन्म देगा।

सम्पत्ति के साम्यवाद की आलोचनाएँ - प्लेटो के सम्पत्ति सम्बन्धी साम्यवाद की सेबाइन, बार्कर, पोपर व अरस्तू द्वारा अनेक आलोचनाएँ की गई हैं :-

(क) अरस्तू द्वारा की गई आलोचनाएँ

1. यह धारणा मानवीय प्रकृति की मूलभूत प्रवृत्तियों की अवहेलना करती है। प्रत्येक मानव में निजी सम्पत्ति प्राप्त करना उसकी स्वाभाविक प्रवृत्ति है और अगर उसे इस अधिकार से वंचित रखने की कोशिश की जाती है तो यह उसकी प्रकृति के प्रतिकूल बात होगी।
2. अरस्तू साम्यवाद को जीवन के सामान्य अनुभव के विरुद्ध मानता है।
3. अरस्तू का यह भी कहना है कि सम्पत्ति की साँझी व्यवस्था कभी भी सामाजिक कल्याण में वृद्धि नहीं कर सकती।
4. अरस्तू का यह भी कहना है कि वैयक्तिक सम्पत्ति की प्रथा का विकास हमारी सभ्यता के विकास का प्रतीक है। वैयक्तिक सम्पत्ति का अभाव प्रगति के मार्ग को रोकता है।
5. इससे परोपकार और उदारता की श्रेष्ठ मानवीय सम्भावनाएँ नष्ट हो जाएँगी क्योंकि व्यक्ति परोपकार सम्बन्धी कार्य निजी सम्पत्ति के आधार पर ही करता है।
6. अरस्तू ने यह विचार प्रस्तुत किया है कि यह अधिक अच्छा होगा कि सम्पत्ति निजी हो परन्तु उसका प्रयोग सामूहिक हो। इससे राज्य तथा व्यक्ति दोनों का भला हो सकता है।
7. व्यक्तिगत सम्पत्ति के लिए उत्साह और लगन के कारण ही मनुष्य दूसरों के साथ प्रतियोगिता करता है तथा अपने सर्वोत्तम गुणों का विकास करता है परन्तु निजी सम्पत्ति के न होने पर ऐसा नहीं होगा।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 12, December 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1112035 |

8. प्लेटो की यह योजना बहुमत को शामिल नहीं करती है और इसलिए यह असफल होकर रहेगी तथा इससे राज्य में विभाजन होगा तथा फूट, ईष्र्या व कलह की सम्भावना प्रबल होगी।
9. अरस्तू का मानना है कि बिना सम्पत्ति के अभिभावक वर्ग सुखी नहीं रहेगा और जिस राज्य में शासक वर्ग ही सुखी नहीं रहेगा उसमें भला प्रजा कैसे सुखी रह सकती है। अत: प्लेटो का साम्यवादी राज्य एक दु:खपूर्ण राज्य होगा।
10. राज्य में एकता को उचित शिक्षा द्वारा ही बढ़ाया जाना चाहिए, साम्यवाद से नहीं। प्लेटो स्वयं आत्मिक उपाय को भौतिक उपाय से अधिक महत्त्व देते हैं। अत: साम्यवाद एक गौण उपाय है।
11. प्लेटो आवश्यकता से अधिक एकता लाने की प्रवृत्ति पर कायम है। वह राज्य की वेदी पर व्यक्तियों की इच्छाओं का बलिदान कर देता है।[5]

(ख) अन्य विद्वानों द्वारा की गई आलोचनाएँ

1. **सद्गगुणों के विकास में बाधक** : निजी सम्पत्ति की व्यवस्था अनेक सद्गुणों के विकास में सहायक होती है, जैसे दान, दया, परोपकार, अतिशय आदि के सद्गुण। किन्तु प्लेटो ने निजी सम्पत्ति के अवगुणों की ओर ध्यान न देकर संरक्षक वर्ग को इससे वंचित कर दिया है, जो अनुचित है।
2. **मानव स्वभाव के प्रतिकूल** : प्लेटो ने निजी सम्पत्ति का अन्त करके मानव स्वभाव के विपरीत कार्य किया है। सम्पत्ति अर्जित करना मानव की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। इससे व्यक्ति के अनेक उदार गुण विकसित होते हैं। अत: प्लेटो ने मानव स्वभाव के विपरीत कार्य किया है।
3. **न्यायपूर्ण वितरण की समस्या :** निजी सम्पत्ति के अभाव में यह बताना कठिन होगा कि किस व्यक्ति का समाज में कितना योगदान है। इससे न्यायपूर्ण वितरण की अनेक समस्याएँ खड़ी होंगी जो समाज की एकता को नष्ट कर देंगी।
4. **व्यक्ति की प्रेरणा शक्ति का ह्रास :** निजी सम्पत्ति के समर्थकों का मानना है कि सम्पत्ति का आकर्षण व्यक्ति को अधिक से अधिक कार्य करने की प्रेरणा प्रदान करता है। इसी प्रेरणा से व्यक्ति अनेक नए-नए आविष्कार करता है, परिश्रम करता है। इसके अभाव में प्रेरणादायक शक्ति का ह्रास हो जाएगा।
5. **अमनोवैज्ञानिक :** निजी सम्पत्ति की संख्या मानव स्वभाव के अनुकूल है। व्यक्ति सम्पत्ति अजर्न करने के लिए ही सारे क्रियाकलाप करता है। प्लेटो अभिभावक वर्ग को इससे वंचित करके मानव प्रकृति के विरुद्ध चला जाता है। अत: प्लेटो का सम्पत्ति का सिद्धांत अमनोवैज्ञानिक है।
6. **अर्ध-साम्यवाद :** प्लेटो सम्पूर्ण सामाजिक इकाई की बजाय एक वर्ग विशेष को ही इस व्यवस्था में शामिल करता है। प्लेटो का साम्यवाद केवल शासक और सैनिक (संरक्षक) वर्ग के लिए ही है। अगर व्यक्तिगत सम्पत्ति मतभेद, अनेकता, लोभ व मोह को जन्म देती है तो उत्पादक वर्ग को इसका अधिकार देना विवेकपूर्ण नहीं है।
7. **मानव स्वतन्त्रता की बलि चढ़ाना :** प्लेटो ने साम्यवाद के नाम पर मानव-स्वतन्त्रता का दमन किया है। प्लेटो की साम्यवाद व्यवस्था में केवल वही कार्य करने का अधिकार होगा जो राज्य चाहेगा। प्लेटो ने व्यक्ति को एक साधनमात्र मानकर व्यक्ति के अधिकार व स्वतन्त्रताओं पर कुठाराघात किया है।
8. **सम्पत्ति से वंचित शासकों की कठिनाइयाँ :** प्लेटो के संरक्षक वर्ग के सदस्य व्यक्तिगत सम्पत्ति से सम्बन्धित समस्याओं और प्रेरणाओं के ज्ञान से भी वंचित रहेंगे जिसके कारण उन्हें साधारण लोगों की सम्पत्ति से जुड़ी समस्याओं का निपटारा करने में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। शासक

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 12, December 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1112035 |

उत्पादक वर्ग की व्यक्तिगत सम्पत्ति को तभी नियन्त्रित कर सकता है, जबकि वह स्वयं निजी सम्पत्ति के गुण-दोषों के बारे में ज्ञान रखता हो।

9. **आध्यात्मिक रोगों के लिए भौतिक उपचार अनुचित :** प्लेटो ने आध्यात्मिक रोगों को रोकने के लिए कोई आध्यात्मिक औषधि न ढूँढकर भौतिक साधनों का सहारा लिया है। संसार की भौतिक वस्तुएँ आध्यात्मिक वस्तुओं के साथ लगी हुई हैं, जिनके निराकरण से यदि बुराई दूर होती है तो उनके द्वारा जो हित होता है, वह भी दूर हो जाएगा। भौतिकतर आध्यात्मिकता का आधार है और उसके लिए साधन भी। भौतिकता को दूर करने का तात्पर्य होगा इन साधनों का अन्त।
10. **तपस्यात्मक :** सम्पत्ति के साम्यवाद की योजना सार्वजनिक हित के नाम पर अभिभावक वर्ग को सम्पत्तिहीन रखती है और सम्पत्ति सम्बन्धी स्वतन्त्रता का अन्त करती है तथा तपस्वी का जीवन व्यतीत करने पर बाध्य करती है। प्लेटो के साम्यवाद में व्यक्ति का जीवन त्याग का जीवन है, भौतिक सुखों का भोग नहीं। प्लेटो का साम्यवाद साधुवादी है जिसमें राज्य के श्रेष्ठ व्यक्ति आर्थिक सुख-सुविधाओं का त्याग करते हैं। [6]अत: साम्यवाद तपस्यात्मक है।
11. **दास-प्रथा का जिक्र नहीं :** प्लेटो ने अपने व्यक्तिगत सम्पत्ति के सिद्धांत में दास-प्रथा जैसे महत्त्वपूर्ण सिद्धांत की चर्चा नहीं की है। प्लेटो ने किसी ऐसे कार्य का उल्लेख नहीं किया है जो दासों द्वारा किया जाए। प्लेटो का दास-प्रथा को महत्त्वहीन समझना उसे स्वयं को ही महत्त्वहीन बना देता है।
12. **सम्पत्ति पर एक पक्षीय विचार :** प्लेटो सम्पत्ति के अवगुणों के आधार पर ही अपने सम्पत्ति के साम्यवादी सिद्धांत को खड़ा करता हैं उसने सम्पत्ति के गुणों की अनदेखी करने की भारी भूल की है। अनेक आलोचनाओं के बावजूद यह मानना ही पड़ेगा कि प्लेटो का सम्पत्ति का साम्यवादी सिद्धांत व्यावहारिक, तर्कपूर्ण एवं उपयोगी है। यह उनके न्याय सिद्धांत का तर्कसंगत निष्कर्ष है। सम्पत्ति का लालच समाज में भ्रष्टाचार व अराजकता को जन्म देता है। आज के सामाजिक वैमनस्य के लिए सम्पत्ति की चाह ही जिम्मेदार हैं प्लेटो ने तत्कालीन एथेन्स की सामाजिक बुराइयों को बहुत करीब से देखा था और उन दोषों को दूर करने के लिए उसने अपना यह सिद्धांत खड़ा किया। यद्यपि उसकी कुछ आलोचनाएँ तर्कपूर्ण हैं लेकिन आज भी यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि प्लेटो का साम्यवादी सिद्धांत बहुत महत्त्वपूर्ण देन है।

2. पत्नियों का साम्यवाद

प्लेटो अपनी पुस्तक रिपब्लिक में संरक्षक वर्ग के लिए केवल निजी सम्पत्ति को ही निषिद्ध नहीं करता अपितु परिवर की संस्था को समाप्त कर अपनी पत्नियों की साम्यवादी योजना भी प्रस्तुत करता है। प्लेटो के न्याय सिद्धांत पर आधारित एक आदर्श के निर्माण के लिए सम्पत्ति के साम्यवाद के साथ ही परिवार का साम्यवाद भी जरूरी है। प्लेटो परिवार व सम्पत्ति में घनिष्ठ सम्बन्ध मानता है। वस्तुत: परिवार का साम्यवाद की योजना उसके सम्पत्ति के ही साम्यवाद का तार्किक विस्तार है। प्लेटो का मानना है कि यदि पारिवारिक संस्था का अन्त किए बिना ही व्यक्तिगत सम्पत्ति के उन्मूलन का प्रयास निरर्थक होगा। विवाह और परिवार भी निजी सम्पत्ति के ही रूप हैं और इससे लालच और ईर्ष्या को बढ़ावा मिलता है। अत: उद्देश्य की दृष्टि से साम्यवाद के ये दोनों प्रकार एक-दूसरे के सहायक व पूरक हैं। प्लेटो के परिवार या पत्नियों के साम्यवाद के महत्त्व पर बार्कर लिखता है- "परिवार की समाप्ति का दिन राज्य के लिए एकता व व्यक्ति के लिए स्वतन्त्रता तथा इन दोनों के लिए न्याय की शुरुआत का दिन होगा।"

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 12, December 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1112035 |

पत्नियों के साम्यवाद के पक्ष में तर्क -

1. **राजनीतिक आधार :** प्लेटो चाहता था कि स्त्रियाँ घर की चारदीवारी की कैद से मुक्त होकर राज्य के शासन सम्बन्धी कार्यों में भाग ले। नारियों के योगदान के बिना राज्य अपने आधे भावी संरक्षकों से वंचित रह जाता है। वह स्त्री-पुरुष में कोई भेद स्वीकार नहीं करता। उसका मानना है कि ऐसा कोई भी प्रशासनिक कार्य नहीं है जो स्त्री न कर सके। वह केवल लिंग-भेद को ही स्वीकार करता है, परन्तु इसे शासन क्रियाओं में बाधक नहीं मानता है। प्लेटो का मानना है कि स्त्रीयाँ राजनीतिक, प्रशासनिक और सैनिक कार्यों में भाग ले सकती हैं और अपना कर्त्तव्य उचित प्रकार से निभा सकती हैं। इस लिए प्लेटो परिवार की कैद से उन्हें मुक्ति दिलाना चाहता है।[7]
2. **नैतिक आधार:** प्लेटो का मानना है कि परिवार व सम्पत्ति का मोह शासक वर्ग को भ्रष्ट बना देता है। पारिवारिक स्नेह-बंधन का कारण होता है। संतान की चिन्ता व्यक्ति को स्वार्थी बनाकर पथभ्रष्ट करती है। परिवारों के मोह के कारण शासक अनुचित नीतियों का पालन करते हैं। इससे शासक वर्ग के विभिन्न परिवारों में भी संघर्ष उत्पन्न होता है। यह राज्य की एकता के लिए भय को पैदा करता है। परिवार राज्य की एकता में महान् बाधक होता है। शासक व सैनिक वर्ग परिवार के प्रति अनुरक्त होकर राज्य के प्रति अपने कर्त्तव्यों की अवहेलना कर सकते हैं। अत: प्लेटो नैतिक आधार पर इस साम्यवाद का समर्थन करता है।
3. सुप्रजनन का आधार: प्लेटो तत्कालीन वैवाहिक प्रथा और पारिवारिक व्यवस्था पर कुठाराघात करता है। उस समय मनुष्य लापरवाही से संभोग करके पशु-पक्षियों की तरह अवैध सन्तानों को जन्म देते थे जो राज्य के हित में किसी भी दृष्टि से उपयोगी नहीं होती थी। राज्य में कुरूप व अयोग्य सन्तानों का अम्बार लगा हुआ था। प्लेटो ने इस समस्या से निजात दिलाने के लिए महसूस किया कि आदर्श राज्य के लिए श्रेष्ठ नागरिक जरूरी हैं। इसके लिए योग्य पुरुष व स्त्रियों का ही सहवास होना आवश्यक है ताकि श्रेष्ठ सन्तान ही जन्म ले। प्लेटो संरक्षक या अभिभावक वर्ग को ही इसके योग्य समझकर इस वर्ग के स्त्री पुरुषों में अस्थायी विवाह सम्बन्ध द्वारा सन्तानोत्पत्ति आवश्यक मानता है। परन्तु वह इसमें यह सावधानी रखता है कि स्त्रियों व पुरुषों के जोड़े उनकी आयु व गुण को ध्यान में रखकर ही बनाए जाएं ताकि श्रेष्ठ सन्तान का जन्म हो।

पत्नियों के साम्यवाद का स्वरूप औरा उसकी व्याख्या -

1. **राज्य-परिवार का स्वरूप :** प्लेटो ने संरक्षक वर्ग के निजी परिवार का उन्मूलन कर राज्य-परिवार (State-Family) का समर्थन किया है। उसके समक्ष नारी सुधार की समस्या थी और साथ ही राज्य के लिए अच्छी-से-अच्छी सन्तान उत्पन्न करना चाहता था। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसने संरक्षक के निजी परिवार का उन्मूलन किया और एक राज्य-परिवार का रूप चित्रित किया।
2. **यौन-सम्बन्ध :** प्लेटो ने उस समय की वैवाहिक प्रथा के दोषों को दूर करने के लिए, अपने आदर्श के निर्माण के लिए यौन-सम्बन्धों में पत्नियों के साम्यवाद के माध्यम से सुधार करने का प्रयास किया है। संरक्षक वर्ग भी अपनी निजी पत्नी नहीं रख सकेगा। सभी का समाजीकरण कर दिया जाएगा। वे एक साथ बैरकों में रहेंगे और एक साथ खाना खाएँगे। प्लेटो को विश्वास है कि परिपक्व व श्रेष्ठ नर-नारी ही श्रेष्ठ संतान को जन्म दे सकते हैं। जिन स्त्री-पुरुषों ने सार्वजनिक सेवा के कार्य या युद्ध में श्रेष्ठता दिखाई है, उसे अधिक सन्तान पैदा करने की छूट प्राप्त होगी। स्त्री व बच्चे सामाजिक होंगे न कि किसी एक व्यक्ति के।[8]

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 12, December 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1112035 |

3. **राज्य बच्चों के पालन-पोषण का पूरा ध्यान रखेगा :** प्लेटो के अनसार बच्चों के जन्म के बाद उनके पालन-पोषण का उत्तरदायित्व राज्य अपने ऊपर लेगा। बच्चों को शिशु-गृहों में रखा जाएगा। माताएँ बच्चों को राज्य की देख-रेख में दूध पिलाएँगी, परन्तु उन्हें अपने बच्चों का कोई भी निजी ज्ञान नहीं होगा, बच्चों को भी अपनी माँ का कोई ज्ञान नहीं होगा।
4. **बच्चा पैदा करने की आयु :** प्लेटो के अनुसार स्त्रियों को 20 से 40 वर्ष तक तथा पुरुषों को 25 से 55 वर्ष तक सन्तान पैदा करने की छूट होगी। इस समय स्त्री व पुरुष परिपक्व होते हैं। उनके इस आयु में सहवास से यौगय सन्तान ही पैदा होगी। राज्य केवल श्रेष्ठ स्त्री-पुरुष के सहवास से उत्पन्न सन्तान का ही लालन-पालन करेगा, निकृष्ट स्त्री-पुरुषों के संभोग से उत्पन्न सन्तान का पालन-पोषण राज्य नहीं करेगा। राज्य के नियमों के विरुद्ध जो सन्तान पैदा होगी, उसे या तो राज्य नहीं पालेगा या उसे किसी अज्ञात एवं अंधकारमय जगह में गाड़ दिया जाएगा या जन्म लेने से पूर्व ही गर्भपात द्वारा नष्ट कर दिया जाएगा।
5. **सम्बन्धों का ज्ञान :** प्लेटो कहता है कि संरक्षक वर्ग के अन्तर्गत आने वाले बच्चे सामुदायिक जीवन के भागीदार होंगे और इस सामुदायिक जीवन में उनके सम्बन्ध भी सामुदायिक होंगे। पुरुष उन सभी बच्चों को अपना पुत्र या पुत्री समझेगा जो उनके वर बनने के मास से लेकर 10 वें मास तक पैदा होते हैं और वे स्त्री बच्चे उस पुरुष को पिता समझेंगे। वह इन बच्चों की सन्तानों को पौत्र कहेगा और वे समुदाय के पुरुषों व स्त्रियों को दादा-दादी कहेंगे तथा वे सब बच्चे जो कि एक माता-पिताओं के समुदाय के प्रजनन काल में उत्पन्न हुए हैं एक दूसरे को भाई-बहिन मानेंगे।

पत्नियों के साम्यवाद के उद्देश्य - प्लेटो के अनुसार पत्नियों के साम्यवाद को प्रतिपादित करने के पीछे उद्देश्य हैं:-

1. **नारियों की मुक्ति :** प्लेटो के समय में एथेन्स में राजनीतिक व सामाजिक कार्यों में स्त्रियों को भाग लेने का अधिकार प्राप्त नहीं था। उन्हें केवल घर की चारदीवारी में रहकर बच्चों का लालन-पालन करना होता था। राज्य की सेवा के लिए बच्चों को उत्पन्न करने में विवाह एक साधन और पत्नी एक उपकरण मानी जाती थी। परिवार की सीमित परिधि में बंधी होने के कारण उनका व्यक्तित्व कुंठित होता है। इससे समाज को भी हानि होती है, क्योंकि स्त्री समाज की आधी सुषुप्त शक्ति होती है। प्लेटो ने यह स्वीकार किया है कि स्त्रियों की संभाव्य शक्ति को ध्यान में रखते हुए उन्हें चारदीवारी से बाहर निकालना आवश्यक है। प्लेटो ने कहा है- "परिवार एक ऐसा साधन है जहाँ मनुष्य की प्रतिभा का हनन होता है तथा पत्नी की मानसिक शक्ति चौके-चूल्हे में ही बर्बाद हो जाती है।" प्लेटो स्त्रियों के इस हीन जीवन का अन्त करके उन्हें सक्रिय राजनीति में देखना चाहता था।
2. **अभिभावक वर्ग की क्षमता में वृद्धि :** परिवार के साम्यवाद की योजना उन्हें परिवार के कुप्रभावों से बचाती हुई अपने परिवार की दैनिक आवश्यकताओं की चिन्ता से मुक्त रखती है। ऐसी स्थिति में अभिभावक वर्ग अपने कर्त्तव्य की पूर्ति करने में भी अधिक सक्षम होगा।
3. **जनसंख्या का सन्तुलन :** परिवार के साम्यवाद की योजना का एक प्रमुख उद्देश्य आदर्श नगर राज्य की जनसंख्या को आदर्श सीमा में ही बनाए रखना है। प्लेटो के अनुसार- "विवाहों की संख्या को हम शासकों के स्वविवेक पर छोड़ देंगे। वे इस लक्ष्य को सदैव ध्यान में रखेंगे कि युद्धों, महामारियों आदि से जनसंख्या की होने वाली हानि के बाद भी नागरिकों की जनसंख्या यथासम्भव स्थिर रहे और वे ऐसे सभी सम्भव

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 12, December 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1112035 |

प्रयत्न करेंगे कि हमारा राज्य न तो जनसंख्या की दृष्टि से बड़ा हो पाए और न छोटा रह जाए. . .।" एण्टोनी फलु के अनुसार- "प्लेटो सामाजिक दृष्टि से जनसंख्या की विस्फोटक स्थिति के बारे में जागरूक है।"[9]

4. **नस्ल-सुधार :** प्लेटो के इस साम्यवाद का उद्देश्य नस्ल-सुधार करना भी है। प्लेटो ने स्पष्ट कहा है कि केवल योग्य पुरुषों व स्त्रियों का ही संभोग कराया जाएगा। कुरूप बच्चों को मार दिया जाएगा या राज्य उनका पालन-पोषण नहीं करेगा। प्लेटो का नस्ल-सुधार का उद्देश्य एक स्वस्थ, हृष्ट-पुष्ट, बलवान, वीर तथा प्रतिभाशाली सन्तान को पैदा करके पूरा हो सकता था। अत: प्लेटो ने नस्ल-सुधार के लिए परिवार के साम्यवाद का सिद्धांत प्रतिपादित किया।
5. **शासकों के शुद्ध विवेक की रक्षा :** प्लेटो के आदर्श राज्य में निर्लिप्त, निष्काम, प्रज्ञावान, दार्शनिक शासकों का शासन होगा, किन्तु सब जानते हैं कि ऐसे शासक पारिवारिक मोह के कारण शुद्ध कर्म व ज्ञान के मार्ग से भटक सकते हैं। प्लेटो ने माना है कि कंचन और कामिनी शासक वर्ग को अपने मार्ग से विचलित कर सकते हैं। इसलिए वह शासक वर्ग के शुद्ध विवेक की रक्षा करने के लिए परिवार को साम्यवाद की व्यवस्था करता है।
6. **राज्य में एकता :** परिवार व्यक्तितयों में तेरे-मेरे की भावना उत्पन्न करता है और इस भावना के कारण संरक्षक वर्ग में सत्ता प्राप्ति के लिए संघर्ष उत्पन्न होता है। प्लेटो ने राज्य के हित में पारस्परिक संघर्ष की इस प्रवृत्ति का अन्त आवश्यक माना है। अत: प्लेटो अभिभावक वर्ग के समस्त स्त्री-पुरुषों को एक ही परिवार (राज्य परिवार) के रूप में बाँधकर राजनीतिक एकता की स्थापना करना चाहता है ताकि समाज के सभी व्यक्ति आपस में भ्रातृभाव से रहें।

पत्नियों के साम्यवाद की आलोचना - प्लेटो के साम्यवाद की निम्न आधारों पर आलोचना की गई है :-

1. **परिवार - एक ऐतिहासिक अनुभव** : प्लेटो ने परिवार नामक संस्था का लोप करके भारी गलती की है। परिवार से ही राज्य व समाज का जन्म हुआ है। परिवार राज्य की छोटी इकाई है। परिवार का अन्त करना मानव समाज के लिए अहितकर होगा क्योंकि :- (क) परिवार एक ऐतिहासिक संस्था है। इसके पीछे युगों का अनुभव है। इसे समाप्त करने का अर्थ है - पुन: असभ्यता के युग में लौटना। (ख) राज्य की तरह परिवार भी मानव-स्वभाव से उत्पन्न संस्था है। राज्य के नाम पर परिवार का अन्त करना सर्वथा अनुचित है। (ग) परिवार नागरिकता की प्रथम पाठशाला है। परिवार ही बच्चे को सद्गुणी बनाता है। परिवार में सहयोग, सहानुभूति, दया, परोपकार व अनुशासन जैसे गुणों को सीखा जाता है।
2. **पत्नी और परिवार के प्रति प्लेटो के विचार सही तथ्यों पर आधारित नहीं हैं** : आलोचकों का कहना है कि स्त्री का बच्चों के प्रति स्नेह और उनके पालन-पोषण की जो स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है, उसे न तो शिशु पालनगृहों को स्थानान्तरित किया जा सकता है और न ही उन गृहों में वही प्यार ही प्राप्त हो सकता है। वैसे भी मातृत्व को समाप्त करना कभी भी एक आदर्श राज्य की नीति नहीं हो सकती बल्कि मातृत्व को राज्य में उचित स्थान को प्राप्त करने का प्रोत्साहन ही प्लेटो के न्याय का सही रूप हो सकता था। मातृत्व एक ऐसी चीज है जिसे माँ के सिवाय कोई दूसरा कृत्रिम तरीके से प्रदान नहीं कर सकता। स्त्री और पुरुष का सम्बन्ध भी पशुओं जैसा सम्बन्ध नहीं है जो सन्तान की उत्पत्ति के लिए ही जुड़ता हो। उसमें एक पवित्रता है और यह सम्बन्ध जीवनभर के लिए होता है। अत: प्लेटो ने पारिवारिक सम्बन्धों के पीछे की वास्तविकता को नहीं समझा। इसलिए अरस्तू ने इसे एक व्यभिचारी योजना कहा है जिसे कोई भी

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 12, December 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1112035 |

सभ्य मानव-जाति स्वीकार नहीं करेगी। माता के स्नेह को प्लेटो राज्य की एकता के नाम पर कुर्बान नहीं कर देता है।[10]

3. **जो वस्तु सभी की होती है, वह किसी की भी नहीं होती :** अरस्तू का आरोप है कि प्लेटो के साम्यवाद में अभिभावक वर्ग की सारी पत्नियों और सभी बच्चे यदि सभी के हैं तो वास्तव में वे किसी के नहीं हैं और इसलिए कोई भी उनकी व्यवस्था व परवाह उतने प्रेम से नहीं कर सकता जितना परिवार में उन्हें मिलता है।
4. **अपराध अधिक होंगे :** आलोचकों का कहना है कि यदि परिवार व व्यक्तिगत सम्पत्ति न रहेंगे तो पिता-पुत्र, माँ-बेटे, भाई-भाई का रिश्ता समाप्त हो जाएगा और तब समाज में स्वाभाविक होने वाली समस्याओं, झगड़ों या अपराधों को पारिवारिक ढंग से नहीं सुलझाया जा सकेगा। ऐसी स्थिति में अपराध बढ़ेंगे। समाज में नैतिक मूल्यों का पतन हो जाएगा और नागरिक अधिक अपराधों की ओर प्रवृत्त होंगे।
5. **अमनोवैज्ञानिक तथा अव्यावहारिक :** प्लेटो के परिवार के साम्यवाद की योजना अपनी प्रकृति से अमनोवैज्ञानिक और अव्यावहारिक है। यही कारण है कि यह योजना प्लेटो के समय में ही अमान्य हो गई थी और न ही इसे आज तक कहीं लागू किया गया। प्लेटो ने स्वयं भी अपनी ग्रन्थ 'लॉज' में अस्थायी विवाह की जगह स्थायी विवाह व निजी परिवार की व्यवस्था को मान्यता दी है।
6. **अनावश्यक योजना :** अरस्तू का विचार है कि प्लेटो ने न्याय की स्थापना के लिए साधन के रूप में परिवार का साम्यवाद गलत अपनाया क्योंकि प्लेटो जिन दोषों - जैसे लोभ, पक्षपात आदि को दूर करने की बात करता है। उसके लिए तो शिक्षा व्यवस्था का सहारा लेना उचित होता। ये रोग नैतिक रोग के समान हैं और इनका इलाज भौतिक साधन द्वारा नहीं हो सकता।
7. **परिवार रहित शासक की व्यावहारिक कठिनाइयाँ :** पारिवारिक सम्बन्धों से अनभिज्ञ व अनजान शासकों को उत्पादक वर्ग के पारिवारिक विवादों को हल करने का अधिकार है, किन्तु वे इस दृष्टि से अयोग्य ही सिद्ध होंगे, क्योंकि उन्हें स्वयं पारिवारिक जीवन का कोई अनुभव नहीं होता है।
8. **अपवित्र यौन-सम्बन्ध की सम्भावना** : प्लेटो को परिवार के साम्यवाद में ऐसी यौन सम्भावना भी है जिससे रक्त का सम्बन्ध भी हो। इस व्यवस्था में पिता-पुत्री को और भाई-बहिन को नहीं पहचानता। अत: इससे अपवित्र यौन-सम्बन्ध की अधिक सम्भावना है जो सामाजिक मापदण्डों के विरुद्ध है। नैतिकता इसका कभी समर्थन नहीं कर सकती।
9. **दासों के लिए स्थान नहीं :** प्लेटो ने दास-वर्ग को इस व्यवस्था से पूर्णत: बाहर रखा है। दास-प्रथा उस समय की सबसे महत्त्वपूर्ण प्रथा थी। दास एक उपयोगी सामाजिक वर्ग का रूप ले चुका था। उनकी अवहेलना करना सर्वथा गलत है।
10. **न्याय सिद्धात के विरुद्ध** : प्लेटो के न्याय सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को अपने स्वाभाविक गुण के अनुसार आचरण करना चाहिए, किन्तु प्लेटो का परिवार का साम्यवाद के सिद्धांत का उल्लंघन करता है। स्त्रियों के लिए स्वाभाविक गुण बच्चों का लालन-पालन है, किन्तु प्लेटो अभिभावक वर्ग की स्त्रियों को इस स्वाभाविक कर्म से वंचित करता है।
11. **व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास में बाधक :** प्लेटो राज्य की एकता को साध्य मानकर व्यक्ति को उसका साधनमात्र मान लेता है। वह अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए परिवार की संस्था को राज्य के अधीन कर देता है। अत: यह व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास में बाधक है।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 12, December 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1112035 |

12. **जीवशास्त्र के नियमों के विरुद्ध :** प्लेटो की परिवार की साम्यवादी व्यवस्था जीवशास्त्र के नियमों के विरुद्ध है। इसमें कोई गारण्टी नहीं है कि गुणवान माता-पिता की सन्तान भी गुणवान हो। यह पद्धति पशु-विज्ञान में तो लागू हो सकती है, जीवशास्त्र में नहीं।
13. **स्त्री-पुरुष में भेद होता है :** प्लेटो स्त्री-पुरुष में लिंग-भेद को छोड़कर अन्य कोई अन्तर नहीं मानता। स्त्री कोमल हृदय होती है, जबकि पुरुष कठोर हृदयी होते हैं। इस तरह के कई अन्तर दोनों में होते हैं। प्लेटो का पत्नियों का साम्यवाद न ही वांछनीय है और न ही सम्भव। प्लेटो परिवार जैसी महत्त्वपूर्ण संस्था का लोप करता है, जो असम्भव है। परिवार जैसी संस्था के समाप्त होते ही बच्चे सद्‌गुणी न होकर आपराधिक प्रवृत्ति की ओर प्रवृत्त होंगे। यह सिद्धांत तर्क की दृष्टि से तो ठीक हो सकता है लेकिन नैतिकता, संस्कृति तथा मनोविज्ञान की दृष्टि से यह कभी मान्य नहीं हो सकता। प्लेटो की सबसे बड़ी उपलब्धि तो यह है कि उसने महिलाओं और पुरुषों की समानता पर जोर दिया है। उसके सारे प्रयास नारी उत्थान के लिए ही हैं। इस कार्य में परिवार की भूमिका काफी महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो सकती है, [9] जिसकी प्लेटो ने उपेक्षा की है। यह निर्विवाद सत्य है कि साम्यवादी व्यवस्था का प्रयास प्लेटो की नारी उत्थान के लिए एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण देन है।

परिणाम

प्लेटो ने रिपब्लिक में न्याय हेतु केवल शिक्षा सिद्धांत का ही नहीं अपितु साम्यवाद के सिद्धांत (Theory of Communism) का भी प्रतिपादन किया हैं। उसकी यह धारणा है कि शिक्षा द्वारा नागरिक के चरित्र-निर्माण का जो वातावरण राज्य में निर्मित होता है उसे नवजीवन एवं नवीन शक्ति प्रदान करने का साम्यवाद पूरक साधन हैं। प्लेटो की आस्था है कि शिक्षा योजना द्वारा ज्ञानवान शासकों का निर्माण किया जायेगा। इन शासकों को कुटुंब तथा सम्पत्ति के प्रलोभनों से मुक्त रखने की आवश्यकता हैं: प्लेटो शासकों के लिए ऐसी सामाजिक आर्थिक व्यवस्था प्रस्तुत करता है जिसमें शासकों की न तो सम्पत्ति ही होगी और न उनके निजी परिवार। प्लेटो इस व्यवस्था को 'सम्पत्ति का साम्यवाद तथा 'पत्नियों' का साम्यवाद कहता हैं। साम्यवाद की इस नवीन सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था को प्लेटो केवल दार्शनिक शासकों तथा सैनिकों पर ही लागू करता है। इस व्यवस्था का स्वरूप कैसा होगा, इस प्रश्न का स्पष्टीकरण यहाँ किया जाता है। प्लेटो के अनुसार साम्यवाद की व्यवस्था के अंतर्गत संरक्षक वर्ग अपने कुटुंब और निजी सम्पत्ति का परित्याग करेंगे जिससे कि राज्य संचालन के कार्य में उनके सम्मुख कुटुंब और सम्पत्ति से पैदा होने वाले मोह उन्हें पथ-भ्रष्ट न कर सकें। जिस तरह शिक्षा का अंतिम लक्ष्य व्यक्ति की आध्यात्मिक उन्नति हैं, उसी प्रकार साम्यवाद का ध्येय भी शासकों की आध्यात्मिक उन्नति करना ही हैं। प्लेटो शिक्षा और साम्यवाद को न्याय की प्राप्ति के दो अभिन्न साधन मानता हैं: शिक्षा न्याय की स्थापना का सकारात्मक आध्यात्मिक साधन हैं। साम्यवाद उसका एक नकारात्मक भौतिक साधन हैं। प्लेटो मानता हैं कि शासक की कर्त्तव्यपरायणता के मार्ग में कुटुंब और सम्पत्ति जैसी संस्थाओं की बाधाएँ आती हैं। साम्यवाद की व्यवस्था इन बाधाओं से दूर करती हैं। यह शासकों के आध्यात्मिक उत्थान का भौतिक साधन हैं। प्लेटो की मान्यता है कि जब शासक का प्रलोभन देने वाले कुटुंब और निजी सम्पत्ति जैसे कारण ही नहीं रहेंगे तब शासकों के नैतिक उत्थान की संभावनाएँ अधिक हो जायेगी। वास्तव में प्लेटो के साम्यवाद का सिद्धांत उसकी न्याय की धारणा का आवश्यक परिणाम हैं। यदि राज्य की एकता और व्यक्ति के नैतिक उत्थान के लिए न्याय आवश्यक हैं तो न्याय के लिए साम्यवाद भी उतना ही अपरिहार्य हैं जितनी आवश्यक शिक्षा हैं।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 12, December 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1112035 |

साम्यवाद की व्यवस्था का क्या स्वरूप हैं, इसे बहुत संक्षेप में यहाँ प्रस्तुत किया जाता है। यह केवल दार्शनिक शासक वर्ग तथा सैनिक वर्ग पर ही लागू होने वाली व्यवस्था हैं, यह उत्पादक वर्ग पर लागू नहीं होती। इसके अन्तर्गत शासकों की न तो निजी सम्पत्ति होगी और न ही उनके निजी कुटुंब होंगे। शासकों की सामूहिकता की इस जीवन-व्यवस्था को प्लेटो ने 'सम्पत्ति का साम्यवाद' (Community of property) तथा 'पत्नियों का साम्यवाद' (Community of wives) कहा हैं। [8]

साम्यवाद के समर्थन में प्लेटो के तर्क

साम्यवाद के समर्थन में प्लेटो के तर्क निम्नलिखित हैं--

1. नैतिक तर्क

साम्यवाद व्यवस्था के समर्थन में प्लेटो का नैतिक तर्क यह है कि इसके द्वारा शासक को समाज की व्यापक व्यवस्था का एक अभिन्न अंग बनाया जाता है। हम जानते हैं कि प्लेटो व्यक्ति को स्वतंत्र एवं स्वार्थमयी इकाई नहीं मानता। व्यक्ति का महत्व केवल इसमें ही है कि वह व्यवस्था का अंग बना रहे एवं नियत स्थान पर बने रहकर नियत कार्य को कुशलतापूर्वक करें। जब प्रत्येक व्यक्ति अपने कार्य को सम्म्क रूप से करेगा एवं दूसरों के कार्यों में स्वार्थभाव से हस्तक्षेप नहीं करेगा, तभी सामाजिक सदाचार की स्थापना होगी। ऐसे नैतिक जीवन की उपलब्धि के लिए प्लेटो संरक्षक वर्ग के लिए साम्यवादी व्यवस्था का प्रतिपादन करता हैं। सरांश यह हैं कि साम्यवाद समाज के नैतिक जीवन के लिए आवश्यक हैं।

2. मनोवैज्ञानिक तर्क

प्लेटो ने साम्यवाद के समर्थन में जो दूसरा तर्क प्रस्तुत किया है वह मनोवैज्ञानिक है। हम देख चुके है कि प्लेटो के आदर्श राज्य के दो वर्ग-शासक एवं सैनिक- आत्मा के विवेक एवं साहस तत्व का प्रतिनिधित्व करते हैं। 'विवेक' एवं 'साहस' को यदि निष्ठा और निःस्वार्थ भाव से कार्य करना है तो उनके लिए यह परमावश्यक है कि वे 'क्षुधा' के प्रलोभनों एवं प्रताड़नाओं से मुक्त रहे। दूसरे शब्दों में, दार्शनिक शासकों एवं सैनिकों को भौतिक वासनाओं से मुक्त रहना चाहिए: न्याय के लिए विवेक और साहस को वासना से मुक्त रहना चाहिए। केवल साम्यवाद द्वारा विवेक का शासन भौतिक प्रलोभनों से मुक्त रह सकता है। साम्यवाद की पुष्टि में प्लेटो का यही मनोवैज्ञानिक तर्क है कि दार्शनिक शासन हेतु 'विवेक' को 'वासना' तत्व से पूर्णतः मुक्त रखा जाये जिसमें कि निःस्वार्थ विवेक सामाजिक हित के कार्य में लग जाये: शासक को क्षुधा/वासना से पूर्णतः मुक्त रखा जाये जिससे कि निःस्वार्थ शासक सामाजिक हित के कार्य में जुट जाये।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 12, December 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1112035 |

3. व्यावहारिक तर्क

प्लेटो व्यावहारिक अथवा राजनीतिक आधार पर भी साम्यवाद को उचित मानता हैं। प्लेटो की यह दृढ़ धारणा है कि शासकों के हाथों में राजनीतिक और आर्थिक शक्तियों का केन्द्रीकरण नहीं होना चाहिए। राजनीतिक और आर्थिक शक्तियों का केन्द्रीकरण राजनीतिक जीवन की शुद्धता अथवा पवित्रता के लिए घातक सिद्ध होता है। इससे शासक वर्ग में भ्रष्टचारी एवं स्वार्थी मनोवृत्ति उत्पन्न होती हैं। जब शासकों का न तो कुटुंब होगा और न ही उनकी निजी सम्पत्ति होगी तब उन्हें पथ-भ्रष्ट करने वाली भ्रष्टाचारी मनोवृत्ति समूल नष्ट हो जायेगी जिससे शासक निःस्वार्थ भाव से सामाजिक हित के लिए समर्पित होकर कार्य कर सकेंगे। [7]

4. दार्शनिक तर्क

प्लेटो ने दार्शनिक आधार पर भी साम्यवाद व्यवस्था को उचित माना है। साम्यवाद का सिद्धांत प्लेटो के कार्यों के विशेषीकरण के सिद्धांत पर आधारित हैं। उसकी यह धारणा है कि जिन लोगों के कंधों पर शासन का विशिष्ट दायित्व हैं उनका जीवन भी विशिष्ट शैली का होना चाहिए। उच्चादर्श की प्राप्ति के लिए समर्पित जीवन सांसारिक प्रलोभनों से मुक्त होना चाहिए। इसी दार्शनिक आधार पर प्लेटो ने दार्शनिक के लिए कुटुम्बहीन एवं सम्पत्तिहीन साम्यवादी जीवन शैली का प्रतिपादन किया हैं।

प्लेटो के साम्यवाद सिद्धांत की विशेषताएं

प्लेटो के साम्यवादी सिद्धांत की निम्नलिखित विशेषताएं हैं--

1. यह व्यवस्था राज्य के सभी वर्गों पर लागू नहीं होती। यह केवल दार्शनिक शासक और सैनिक वर्ग के लिए हैं, उत्पादक वर्ग के लिए नहीं। इसीलिए यह कहा जाता हैं कि प्लेटो का साम्यवाद 'अर्द्ध साम्यवाद' हैं क्योंकि यह व्यवस्था समाज के केवल आधे भाग पर, केवल शासक वर्ग पर लागू होती हैं, उत्पादक वर्ग पर नहीं। संरक्षक वर्ग सम्पत्ति और कुटुंब से अछूता रहेगा, उत्पादक वर्ग के लोगों की निजी सम्पत्ति रहेगी तथा वे अपने कुटुंबों को भी रखेंगे।

2. दूसरा, प्लेटो का साम्यवाद समाज के आर्थिक ढाँचे को यथावत् बनाए रखता हैं। आधुनिक समाजवादियो की तरह यह उत्पादन के साधनों पर राज्य अथवा समाज का आधिपत्य स्थापित नहीं करता। प्लेटो के साम्यवाद में सम्पत्ति के समाजीकरण अथवा राष्ट्रीयकरण का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। यहाँ उत्पादन वर्ग के हाथों में निजी सम्पत्ति रहती हैं। आधुनिक प्रशासन की भाषा में यह कहा जा सकता है कि यह व्यवस्था आर्थिक जीवन के व्यक्तिवादी प्रबन्ध की व्यवस्था हैं। जिसका नियंत्रण राज्य हितार्थ किया जाता हैं।

3. प्लेटो का साम्यवाद समाज में एकता की स्थापना को अपना परम लक्ष्य मानता हैं। समानता स्थापित करना उसका लक्ष्य नहीं हैं। साम्यवादी व्यवस्था को लागू करने के पीछे प्लेटो का मन्तव्य लोकतांत्रीय शासन की स्थापना

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 12, December 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1112035 |

करना नहीं हैं। उसका उद्देश्य 'बौद्धिक कुलीनतंत्र' के शासन की स्थापना करना है जिसमें शासन की बागडोर थोड़े से ज्ञानी शासकों के हाथों में हैं। साम्यवाद का प्रयोजन केवल इन थोड़े से शासकों के जीवन को नियन्त्रित करने के लिए हैं जिससे कि व आर्थिक और कौटुम्बिक प्रलोभनों से दूर रहते हुए सामाजिक हित के लिए कार्य करते रहें।

4. प्लेटो के साम्यवाद का लक्ष्य आर्थिक सुख की प्राप्ति नहीं हैं। उसका लक्ष्य नागरिकों के आर्थिक स्तर का ऊँचा उठाना नहीं हैं। वास्तव में प्लेटो के आदर्श राज्य का शासक वर्ग 'निर्धनता की साझेदारी' का जीवन बिताता हैं जिसके पास न भूमि हैं, न घरबार हैं, और न ही निजी सम्पत्ति। समाज से प्राप्त भोजन, बैरकों में सामूहिक से रहना तथा सोनेचाँदी और आभूषणों के हाथ न लगाना, ऐसी उनकी जीवन शैली हैं। उनका जीवन त्याग का हैं, भौतिक सुखों के भोग का नहीं। प्लेटो का साम्यवाद साधुवादी हैं जिसमें राज्य के श्रेष्ठ व्यक्ति आर्थिक सुख-सुविधाओं का त्याग करते हैं। प्लेटो के साम्यवाद का उद्देश्य राजनीतिक हैं, आर्थिक नहीं। यह राज्य की एकता की आकांक्षा करता हैं, आर्थिक सुधार की नहीं।[6]

प्लेटो के साम्यवाद के प्रकार (plato ka samyave prakar)

प्लेटो का साम्यवाद दो प्रकार का है-

1. सम्पत्ति का साम्यवाद

2. पत्नियों का साम्यवाद

प्लेटो का सम्पत्ति संबंधी साम्यवाद

व्यक्तिगत सम्पत्ति का उन्मूलन प्लेटो की साम्यवादी विचारधारा का एक अंग है। प्लेटो की धारणा है कि व्यक्तिगत सम्पत्ति व्यक्ति को स्वार्थी लालची, ईर्ष्यालु प्रतिद्वन्द्वी और हीन बनाती है और राज्य की एकता और न्याय को संकट में डाल देती है। अत : प्लेटो अपने आदर्श राज्य के दार्शनिक शासकों और सैनिकों को व्यक्तिगत सम्पत्ति से वंचित रखता है। वह धन या सम्पत्ति को अनैतिक बतलाते हुए कहता है कि एक ही व्यक्ति के हाथ में सम्पत्ति और शासन की शक्ति रहने से वह पथभ्रष्ट होकर भीषण परिस्थितियों उत्पन्न कर सकता है। अतः सम्पत्ति को शासन से अलग रखना ही श्रेयस्कर है शासक तथा सैनिक वर्ग निजी सम्पत्ति के अधिकारी नहीं बन सकते। प्लेटो संरक्षक वर्ग के लिए सम्पत्ति विषयक साम्यवाद का प्रतिपादन करते हुए कहता है कि, " पहली बात यह है कि उनके पास तो केवल उतनी ही सम्पत्ति होगी जितनी जीवन के लिए नितान्त अनिवार्य है। न तो उनके पास अपना कोई घर होगा और न कोई ऐसा गोदाम जो सबके लिए खुला न हो। उन्हें सामान्य भोजनालयों में भोजन करना चाहिए। सिपाहियों की तरह डेरों में रहना चाहिए और केवल ये ही ऐसे नागरिक हैं जिन्हें सोना-चांदी छूना तक नहीं चाहिए। इसी में उनकी मुक्ति है और ऐसा करने से वे राज्य के रक्षक बन सकेंगे।"प्लेटो की साम्यवादी व्यवस्था में संरक्षक वर्ग के पास किसी प्रकार की कोई सम्पत्ति नहीं होगी। उनकी सेवाओं के पुरस्कारस्वरूप उत्पादक वर्ग उन्हें प्रति वर्ष वस्तुओं के रूप में निश्चित वेतन देगा। इन वस्तुओं का उपयोग एवं

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 12, December 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1112035 |

स्वामित्व भी व्यक्तिगत आधार पर नहीं होगी, सामूहिक रूप से ही वे इनका उपयोग कर सकेंगे। राज्य के तीसरे वर्ग- उत्पादक वर्ग (Producing Class) को ही प्लेटो ने व्यक्तिगत सम्पत्ति रखने का अधिकार दिया है। राज्य के अंग के रूप में इस वर्ग का गुण क्षुधा (Appetite) है, अतः सम्पत्ति पैदा करने एवं संचय करने का अधिकार केवल इसी को दिया जा सकता है, किन्तु प्लेटो इस वर्ग को यह अधिकार स्वच्छन्द रूप से प्रदान नहीं करता। यह वर्ग सम्पत्ति का उत्पादन राज्य के कठोर नियन्त्रण में ही करेगा। सरकार व्यापार व्यवसाय तथा उद्योग-धन्धों पर कठोर नियन्त्रण रखेगी। राज्य इस बात को भी ध्यान में रखेगा कि उत्पादक वर्ग में कोई बहुत अधिक धनी तथा कोई बहुत अधिक निर्धन न हो जाय। कतिपय हाथों में धन का बाहुल्य होना तथा बहुसंख्यक लोगों का आर्थिक अभाव से पीड़ित होना- ये दोनों ही स्थितियां प्लेटो के अनुसार आदर्श राज्य के लिए अवांछनीय है। यह आर्थिक क्षेत्र में व्यक्तिगत आधार पर उत्पादन एवं राज्य नियन्त्रण (State Control) का समर्थक है। प्लेटो के अनुसार राज्य को न केवल सम्पत्ति के अत्यधिक बाहुल्य एवं अत्यधिक न्यूनता को ही नियन्त्रित करना है, बल्कि यह भी देखना कि सम्पत्ति उचित साधनों से अर्जित की गई है अथवा नहीं ऊंचे ब्याज पर अथवा अधिक मुनाफा रखकर किया गया सम्पत्ति का संचय उसने अनुचित माना है। कृषि विषय में प्लेटो का यह विचार था कि उत्पादन व्यक्तिगत आधार पर किया जाये और भूमि पर व्यक्तिगत स्वामित्व हो भूमि प्रकृति की देन है, अतः सभी कृषकों में इसका समान रूप से वितरण किया जाना चाहिए सभी प्रकार की सम्पत्ति के उपयोग के बारे में प्लेटो ने यह विचार व्यक्त किया है कि यह उपयोग किसी भी तरह से समाज के लिए अनिष्टकारी सिद्ध नहीं होना चाहिए। समाज के सभी वर्गों के उचित हितों को ध्यान में रखकर सम्पत्ति के उपयोग की व्यवस्था की जानी चाहिए क्योंकि अन्ततोगत्वा सम्पत्ति समाज के द्वारा ही पैदा की जाती है। [5]

प्लेटो के सम्पत्ति विषयक साम्यवाद की विशेषताएं

प्लेटो के सम्पत्ति विषयक साम्यवाद की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं--

1. यह साम्यवाद सभी नागरिकों के लिए नहीं, वरन् केवल शासक और सैनिक वर्ग के लिए है इसका उद्देश्य यद्यपि सम्पूर्ण समाज का कल्याण है किन्तु इसे सम्पूर्ण समाज के द्वारा व्यवहार में नहीं लाया जाता है।

2. इसका उद्देश्य राजनीतिक है , आर्थिक नहीं है। आधुनिक साम्यवाद की तरह इसका उद्देश्य आर्थिक विषमता दूर करना नहीं वरन् राजनीति और शासन व्यवस्था को दोषमुक्त करना है।

3. प्लेटो का साम्यवाद भोग का नहीं वरन् त्याग का मार्ग है। यह समाज के शासक वर्ग को कंचन और कामिनी का मोह छोड़कर जनकल्याण में रत रहने के लिए प्रेरित करता है।

फोस्टर के शब्दों में, " प्लेटो के संरक्षक वर्ग को सामूहिक रूप से सम्पत्ति का स्वामित्व ग्रहण करना नहीं वरन् इसका त्याग करना है।"

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 12, December 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1112035 |

प्लेटो के सम्पत्ति विषयक साम्यवाद के पक्ष में तर्क

सम्पत्ति के साम्यवाद के औचित्य को सिद्ध करने के लिए प्लेटो ने नैतिक, दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, व्यावहारिक और राजनीतिक तक के रूप में अनेक आधार प्रस्तुत किये हैं, परन्तु सम्पत्ति के साम्यवाद का मूल आधार व्यावहारिक तथा राजनीतिक है। प्रमुख आधार इस प्रकार हैं--

1. मनोवैज्ञानिक आधार

प्लेटो आत्मा के तीन तत्व या विशेष गुण मानता है विवेक, शौर्ष और इन्द्रिय तृष्णा इन तीनों गुणों के आधार पर प्लेटों ने समाज को तीन वर्गों में बांटा है- शासक, सैनिक और उत्पादक वर्ग प्लेटो के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए और शासक तथा सैनिक वर्ग के लिए अपने कर्तव्य पालन के लिए आर्थिक वृत्तियों का त्याग किया जाना आवश्यक है क्योंकि यदि वे ऐसा नहीं करेंगे तो उनमें विवेक एवं शौर्य के स्थान पर इन्द्रिय तृष्णा का तत्व प्रबल हो जाएगा।

इस प्रकार शासक वर्ग में विशुद्ध विवेक तथा सैनिक वर्ग में शीर्ष बनाए रखने के लिए इन वर्गों के संबंध में सम्पत्ति विषयक साम्यवाद को अपनाना आवश्यक है।

2. दार्शनिक आधार

प्लेटो के साम्यवाद का दार्शनिक आधार कार्य विशिष्टीकरण एवं विभाजन का सिद्धांत है। इस सिद्धांत का आशय यह है कि जिन्हें शासन जैसा महत्वपूर्ण कार्य सौंपा गया है, उन्हें ऐसे सभी सांसारिक तत्वों से बचकर रहना चाहिए जो शासन कार्य में बाधा डालते हैं धन एक ऐसा तत्व है, अत : संरक्षक वर्ग को इससे अलग रखा जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त जब शासकों का प्रशिक्षण विशिष्ट कार्य के लिए हुआ है तो उन्हें श्रेष्ठ नियमों के अधीन होना चाहिए।

3. नैतिक आधार

बार्कर के अनुसार, " सम्पत्ति के उन्मूलन के लिए जो तर्क उसने प्रस्तुत किये हैं, वे पूर्णतया नैतिक है।"
प्लेटो के राजनीतिक चिन्तन का एक प्रमुख उद्देश्य व्यक्ति एवं समष्टि (राज्य-समाज) के पारस्परिक संबंधों को समुचित स्वरूप निर्धारित करने का था। यह इस गलत धारणा को समूल नष्ट करना चाहता था कि व्यक्ति का इकाई के रूप में केवल मात्र अपने सन्तोष के लिए ही अस्तित्व है। उसकी मान्यता थी कि जिस सम्पूर्ण जीवन की कामना एवं लालसा किसी व्यक्ति को होनी चाहिए। उस सम्पूर्ण जीवन को प्राप्ति केवल तभी हो सकती है जबकि व्यक्ति समष्टि (राज्य) के एक अंग के रूप में अपने अस्तित्व को स्वीकार करे और अपने योग्य स्थान तथा कार्यक्षेत्र का निर्धारण करके अपने कर्तव्यों का अत्यन्त निष्ठा के साथ पालन करे। इस प्रकार जीवन को अनुशासित करने को ही प्लेटो ने न्याय की संज्ञा दी है। साम्यवाद 'प्लेटो की दृष्टि में' न्याय के सिद्धांत का एक

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 12, December 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1112035 |

अनिवार्य परिणाम है, अतः राज्य के दो वर्गों दार्शनिक शासक एवं सैनिक वर्ग के लिए उपयुक्त है कि ये साम्यवाद के अनुशासन में रहें जिससे ये विकतात के साथ अपने कर्तव्यों का समुचित ढंग से पालन कर सकें। [4]

4. व्यावहारिक आधार

प्लेटो की साम्यवादी योजना का व्यावहारिक आधार भी है। सम्पत्ति विषयक साम्यवाद को वह इसलिए आवश्यक मानता था कि राज्य की राजनीतिक शक्ति तथा आर्थिक शक्ति का एक ही हाथों में आ जाना किसी भी प्रकार से बांछनीय नहीं है। साथ ही उसमें अनेक गम्भीर खतरे छिपे हुए हैं। आर्थिक एवं राजनीतिक शक्ति का एकीकरण 'आदर्श राज्य' के अस्तित्व को बड़े भारी संकट में डाल सकता है क्योंकि यह एकीकरण शासक के विवेक को कण्ठित कर देता है। यह निःस्वार्थता, सेवा तथा कर्तव्यपरायणता को तिलांजलि देकर एक अन्धे एवं विवेकहीन की भांति अपनी समस्त राजनीतिक शक्ति का प्रयोग अधिकतम व्यक्तिगत आर्थिक लाभ के लिए करने लगता है। उसके इस प्रकार के अनुचित आचरण की प्रतिक्रिया शासित वर्ग में होती है। वे उसके अज्ञान, लोलुपता तथा स्वार्थपूर्ण व्यवहार से पूणा करने लगते हैं। समय के साथ उनमें (शासक एवं शासित) वैमनस्य की खाई बढ़ने लगती है, जिसके विकराल रूप धारण करने पर राज्य के विभाजन एवं समाज के अन्त होने तक का खतरा पैदा हो जाता है।

अतः व्यावहारिकता का यह तकाजा है कि इस प्रकार के सम्भावित खतरे से त्राण पाने के लिए शासक वर्ग को सम्पत्ति के स्वामित्व से सदैव वंचित रखा जाये।

5. राजनीतिक आधार

सेबाइन के शब्दों में, "प्लेटो का साम्यवाद मुख्यत : राजनीतिक उद्देश्य लिए हुए था।" साम्यवाद की स्थापना में प्लेटो ने अनेक राजनीतिक समस्याओं का समुचित समाधान देखा है। इस सिद्धांत से एक राजनीतिक समस्या यह हल होगी कि राज्य की एकता तथा खुशहाली निरन्तर बनी रहेगी, क्योंकि राज्य के विभिन्न वर्गों के लोगों में पद-लोलुपता से उत्पन्न प्रतिस्पर्द्धा का अभाव होगा वे अपने दायित्वों को पूरा करने में श्रेष्ठ ढंग से निरन्तर लगे रहेंगे। बार्कर ने इस सिद्धांत का राजनीतिक आधार इस कारण से माना है कि यह सिद्धांत केवल मात्र शासक वर्ग के लोगों के लिए है। अत : इसका संबंध राज्य के उन लोगों से है जिनके हाथ में राजनीतिक जीवन की बागडोर है ।

प्लेटो के सम्पत्ति के साम्यवाद का मूल्यांकन अथवा आलोचना

प्लेटो के सम्पत्ति के साम्यवाद की अनेक आधारों पर आलोचना की गई है। आलोचकों का कथन है कि यह 'अर्द्ध - साम्यवाद' है। यह एक राज्य में दो राज्यों को जन्म देता है। यह एकता के स्थान पर विघटन उत्पन्न करता है; यह अतिवादी, अस्पष्ट और मानव प्रकृति तथा स्वभाव के विपरीत है। यह आध्यात्मिक रोग के लिए भौतिक उपचार प्रस्तुत करता है जो अपर्याप्त है। प्लेटो के सम्पत्ति के साम्यवाद की आवोचना निम्नलिखित आधार पर की जाती है—[3]

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 12, December 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1112035 |

1. अर्द्ध साम्यवाद

प्रो. बार्कर और प्रो नैटिलशिप का मत है कि प्लेटो का सम्पत्ति का साम्यवाद अर्द्ध साम्यवाद है क्योंकि यह समाज के सभी वर्गों पर लागू नहीं होता। यह तो समाज के केवल दो वर्गों (शासक व सैनिक वर्ग) पर ही लागू होता है जो संख्या में अत्यधिक अल्पमत में है।

2. अव्यावहारिक एवं नकारात्मक

प्लेटो का साम्यवाद अव्यावहारिक भी है और नकारात्मक भी यह राज्य की समस्त जनता के भौतिक कल्याण की बात नहीं करता उत्पादकों को व्यक्तिगत सम्पत्ति का अधिकार देकर और शासकों तथा सैनिकों को उससे वंचित रखकर यह राज्य की एकता को बनाये रखने के स्थान पर विभाजन को बढ़ावा देता है। यह एक राज्य में दो राज्यों को जन्म देता है।

3. सम्पत्ति की समस्याओं को सुलझाने में असमर्थ

सम्पत्ति का साम्यवाद सम्पत्ति से उत्पन्न होने वाली समस्याओं झगड़ों और जटिलताओं को समुचित रूप से सुलझाने में भी असमर्थ है। जो वर्ग (शासक वर्ग) सम्पत्तिविहीन है। एक तो वह सम्पत्ति से उत्पन्न होने वाली समस्याओं को समझ नहीं सकता और दूसरे उसके द्वारा किए गए समाधान अपर्याप्त एवं अनुचित होंगे। नैतिक जीवन बिताने वालों और सम्पत्ति के संबंध में अनुभवहीन व्यक्तियों से सम्पत्ति की समस्याओं के समुचित समाधान की आशा कोरा आदर्शवाद हैं।

4. मानव प्रकृति और स्वभाव के विपरीत

युगों-युगों से व्यक्तिगत सम्पत्ति मानव व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति और उसके सामाजिक स्तर का चिन्ह रही है। अतः व्यक्तिगत सम्पत्ति से समाज के एक बहुत बड़े भाग को मंचित करना मानव प्रकृति की उपेक्षा करना ही नहीं बल्कि व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रगति को अवरुद्ध करना भी है।

अरस्तू द्वारा प्लेटो के सम्पत्ति विषयक साम्यवाद की आलोचना

प्लेटो के प्रमुख शिष्य अरस्तू ने प्लेटो के सम्पत्ति विषयक साम्यवाद की निम्न प्रकार से आलोचना की है--

1. अरस्तू के अनुसार प्लेटोका साम्यवाद 'आध्यात्मिक बुराइयों का भौतिक निदान' है जिसके परिणाम आशनुकूल नहीं हो सकते।

2. प्लेटका साम्यवाद समाज की वेदी पर व्यक्ति का बलिदान कर देता है।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 12, December 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1112035 |

3. साम्यवाद जीवन के सामान्य अनुभव के विरुद्ध है।[2]

4. यह व्यवस्था समाज में झगड़ों और फूट को बढ़ाने वाली है। वैयक्तिक सम्पत्ति में व्यक्तिगत स्वार्थ का क्षेत्र अलग होने से पारस्परिक कलह का एक मुख्य कारण दूर हो जाता है , साम्यवाद में वैयक्तिक क्षेत्र सुनिश्चित न होने के कारण विवाद अधिक होगा। समाज की उन्नति अवरुद्ध हो जायेगी।

5. प्लेटो का साम्यवाद उत्पादक वर्ग पर लागू नहीं किया गया है जिसकी संख्या समस्त जनसंख्या की आधे से भी अधिक होती है। इस प्रकार यह राज्य की समस्त जनसंख्या के भौतिक कल्याण का ध्यान नहीं रखता और राज्य को दो विषम समुदायों में बाट देता है जिससे देश की एकता बनाए रखना असम्भव हो जाता है।

6. मनुष्य में यह स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि वह अपनी निजी सम्पत्ति रखना चाहता है, उसमें गर्व और गौरव का अनुभव करता है, उसे बढ़ाने में दिन-रात लगा रहता है। किसी वस्तु को अपना समझने में मनुष्य को अवर्णनीय आनन्द होता है। साम्यवाद में यह लाभ नहीं मिल सकता है।

7. इससे परोपकार और उदारता की श्रेष्ठ मानवीय सम्भावनाएँ नष्ट हो जायेंगी क्योंकि परोपकार संबंधी कार्य वैयक्तिक सम्पत्ति के आधार पर ही कर सकता है।

8. प्लेटो राज्य की एकता बनाए रखने के लिए वैयक्तिक सम्पत्ति का अन्त करना चाहता है किन्तु यह एकता उपयुक्त शिक्षा द्वारा ही प्राप्त की जा सकती हैं, न की साम्यवाद के द्वारा।

प्लेटो का परिवार अथवा पत्नियों का साम्यवाद

प्लेटो अभिभावक वर्ग के लिए निजी सम्पत्ति को ही निषिद्ध नहीं करता अपितु उनके निजी कुटुंबों को भी समाप्त कर कुटुंब के अथवा पत्नियों के साम्यवाद की व्यवस्था की योजना को रिपब्लिक में प्रस्तुत करता हैं। इस योजना के अनुसार दार्शनिक शासकों तथा सैनिकों के निजी परिवार नहीं होंगे। राज्य द्वारा केवल उनके 'अस्थायी' विवाह की व्यवस्था की जायगी जिससे उत्पन्न संतान को राज्य द्वारा ले लिया जाएगा, किन्तु शासकों को यह पता नहीं लगने दिया जायेगा कि उनकी संतान कौन हैं और न ही संतान को यह पता होगा कि उनके माता-पिता कौन हैं।

यह योजना उसके सम्पत्ति के साम्यवाद का तार्किक उपप्रमेय है। प्लेटो की राज्य की सर्वोच्च एकता को स्थापित करने की अभिलाषा तब तक पूर्ण नहीं हो सकती जब तक कि वह संपत्ति के प्रयोजन हेतु आवश्यक संस्था परिवार को समाप्त नहीं करता। प्लेटो परिवार को इस उद्देश्य में बाधक मानता है। अतः वह परिवार के साम्यवाद की योजना को भी दर्शाता है। [1]

इससे पूर्व कि हम प्लेटो के परिवार के साम्यवाद की व्यवस्था के उद्देश्यों का विवेचन करें कुछ तथ्यों को अवश्य एवम् स्पष्टतः ध्यान में रखा जाना चाहिए। प्रथमतः संपत्ति के साम्यवाद की ही तरह यह योजना भी केवल संरक्षक

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 12, December 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1112035 |

वर्गों अर्थात् शासक एवम् सैनिकों पर लागू होगी। द्वितीयतः प्लेटो परिवार के साम्यवाद की योजना को कहीं अधिक विस्तार से बताता है साथ ही ऐसी व्यवस्था की आलोचना का प्रत्युत्तर भी सशक्त रूप में देता है। तृतीयतः जैसा कि फोस्टर का मानना है," पत्नियों के साम्यवाद की योजना प्लेटो द्वारा दर्शायी गई सर्वाधिक विलक्षण संस्था है, और यह बिल्कुल वैसे ही है जैसे कि दर्शन का शासन उसके द्वारा दर्शायी गई सर्वाधिक मौलिक संस्था है।' अरस्तू ने भी इस बात की ओर इशार किया था कि ऐसे अनूठेपन का प्रवर्तन अन्य किसी व्यक्ति द्वारा नहीं किया गया था। चौथे, निःसंदेह एथेंस में ऐसी किसी व्यवस्था के पूर्वोदाहरण नहीं मिलते परन्तु स्पार्टा में महिलाऐं पुरुषों के समान ही सैनिक प्रशिक्षण प्राप्त करती थीं, वहाँ पर महिलाओं का दायित्व राज्य के लिए सन्तानोत्पत्ति माना जाता था। अतः महिलाऐं भी राज्य की सेवा हेतु पुरुषों के समान ही अपनी भूमिका निर्वहित करती थीं, पाँचवें, एथेंस में महिलाओं की स्थिति को संतोषप्रद नहीं कहा जा सकता था। उनकी भूमिका बच्चों के पालन पोषण तथा घर के दैनिक कार्यों तक ही सीमित थी, सार्वजनिक मामलों में उनकी कोई भूमिका नहीं थी महिलाओं को ऐसी स्थिति प्लेटो को स्वीकार्य नहीं थी वह इस स्थिति में सर्वप्रथम कुछ सुधारों को सुझाता है। प्लेटो द्वारा पत्नियों के साम्यवाद (परिवार के साम्यवाद) की योजना को बताने के पीछे तीन मुख्य उद्देश्यों को देखा जा सकता है--

1. राजनीतिक उद्देश्य

परिवार की समाप्ति के पीछे प्लेटो का एक प्रमुख लक्ष्य राज्य की सर्वाधिक एकता को स्थापित करना था। इसी लक्ष्य की प्राप्ति हेतु वह संरक्षक वर्ग के वैयक्तिक संपत्ति रखने के अधिकार को समाप्त करता है क्योंकि वह संपत्ति को एकता के मार्ग की बड़ी बाधा समझता है। प्लेटो परिवार को राज्य की एकता का शत्रु मानता है। अतः वह संरक्षक वर्ग के लिए वैयक्तिक परिवार की अनुमति नहीं देता प्लेटो के अनुसार परिवार प्रेम राज्य-स्वामिभक्ति एवं राज्य की एकता हेतु एक प्रबल प्रतिद्वंद्वी के रूप में उपस्थित हो जाता है। अनुभव भी ऐसा ही दर्शाता है कि परिवार बनाम राज्य के संघर्ष में व्यक्ति की प्रथम प्राथमिकता परिवार ही होता है। इसलिए प्लेटो परिवार को स्वार्थ का केन्द्र मानकर इसकी भर्त्सना करता है। पारिवारिक स्वार्थ विकृत होकर पारिवारिक संघर्ष, अव्यवस्था एवं राजद्रोह में परिणत हो सकते हैं।

अतः प्लेटो नागरिकों में राज्य के प्रति स्वामिभक्ति के स्थान पर पारिवारिक स्वामिभक्ति न जन्म ले सके इस उद्देश्य से परिवार की समाप्ति की वकालत करता है। संभवतः वह वैयक्तिक स्तर पर परिवार के स्थान पर सार्वजनिक स्तर पर परिवार को स्थापित करता है, जैसा कि बार्कर का कथन भी है वह परिवार को राज्य में आयातित कर देता है। वह राज्य को परिवार और परिवार को राज्य बनाना चाहता था।

2. नैतिक उद्देश्य

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है प्लेटो एथेंस में महिलाओं की दयनीय स्थिति को अनुभव करता था। अतः वह महिलाओं को पारिवारिक बंधन के दासत्व से मुक्ति दिलाना चाहता था। उसकी मान्यता थी कि महिलाओं के कार्यक्षेत्र को प्रजनन तथा बच्चों के लालन पोषण तक सीमित कर देने से उनकी प्रतिभा की सेवा हेतु समुचित उपयोग नहीं हो रहा था, साथ ही महिलाएं अपने व्यक्तित्व के विकास से भी वंचित की जा रही थी। प्लेटो का तर्क

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 12, December 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1112035 |

था कि पुरुष व स्त्री में लिंग भेद के अतिरिक्त प्रतिभा संबंधी कोई भेद नहीं है। समान प्रशिक्षण देकर महिलाओं से पुरुषों जैसी ही प्रतिभा तथा सेवाएं प्राप्त की जा सकती हैं। यहाँ पर प्लेटो राज्य के संरक्षकों की तुलना प्रहरी कुत्तों से करता है और तर्क देता है कि यह भूमिका किसी भी लिंग के कुत्ते से ली जा सकती है तब महिला संरक्षक भी पुरुषों के समान ही राज्य की सेवा कर सकती हैं। प्लेटो द्वारा दर्शाए न्याय के सिद्धान्त की भावना भी ऐसी ही है कि महिलाएं राज्य के प्रति कार्यों व दायित्वों के निर्वहन में अपनी प्राकृतिक क्षमता एवम् प्रशिक्षण के आधार पर पुरुषों के समान समझी जाए। प्लेटो यह भी स्पष्ट कर देता है कि वह अपनी योजना की वकालत मात्र महिलाओं के उद्धार के उद्देश्य से नहीं कर रहा बल्कि यह तो एक उद्देश्य का साधन है और उद्देश्य राज्य की सेवा का है। [2]

अतः प्लेटो महिलाओं के अधिकारों से कहीं अधिक महिलाओं के कर्तव्यों की शिक्षा दे रहा है।

3. सृजननिकी

यह उद्देश्य नस्ल सुधार की प्लेटो की योजना है। यहाँ पर वह स्थायी विवाहों की व्यवस्था के स्थान पर अस्थायी विवाहों को सुझाता है ताकि पुरुष एवं महिलाओं के युगलों में से सर्वोत्तम का चयन करके अस्थायी रूप में उनके मध्य राज्य नियंत्रित पद्धति से सर्वोत्तम संतति प्राप्त की जा सके।

प्लेटो के परिवार के साम्यवाद की योजना का स्वरूप

प्लेटो के परिवार एवं पत्नियों की यह योजना निम्नवत् है--

1. संरक्षक वर्ग की सभी महिलाएं व पुरुष एक दूसरे के लिए सामूहिक हैं। सभी संरक्षक पुरुष एवं महिलाएं सामूहिक बैरकों में निवास करेंगे।

2. राज्य इन पुरुषों एवं महिलाओं के मध्य अस्थायी रूप से संगम की व्यवस्था करवाएगा। प्लेटो इस हेतु पुरुषों के पच्चीस से पचास वर्ष के आयु वर्ग तथा महिलाओं के बीस से चालीस वर्ष के आयु वर्ग के लिए सुझाव देता है।

3. बच्चे का जन्म होने के उपरान्त इन युग्मों को अलग-अलग कर दिया जाएगा और नए युग्म बनाए जाएंगे। 4. सभी उत्पन्न बच्चे सभी संरक्षकों के सामूहिक बच्चे कहलाएंगे।

5. सभी बच्चों का पालन-पोषण राज्य द्वारा किया जाएगा।

6. प्लेटो कमजोर बच्चों को समाप्त कर देने की भी सलाह देता है। [3]

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 12, December 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1112035 |

संपति के साम्यवाद और परिवार के साम्यवाद के मध्य एक अंतर यह दिखायी पड़ता है कि जहाँ संपत्ति के साम्यवाद की योजना संपत्ति के सामूहिक त्याग की योजना है वहीं परिवार के साम्यवाद अर्थात् पत्नियों के साम्यवाद में यह योजना पत्नियों/स्त्रियों के सामूहिक स्वामित्व की हैं।

प्लेटो के परिवार अथवा स्त्रियों के साम्यवाद की आलोचना

साम्यवाद की इस योजना की आलोचना इस आधार पर की जा सकती है कि प्लेटो के उद्देश्य के उचित रहते हुए भी इसके लिए अपनाए गए साधन अनुचित हैं, विशेषकर परिवार के साम्यवाद की योजना कभी भी किसी भी समाज को स्वीकार्य नहीं हो सकती पुनः कुछ आलोचनाएं निम्न बिन्दुओं में दर्शायी जा सकती हैं--

1. पुरुष एवं स्त्रियों के मध्य मात्रा का नहीं रूप का अंतर है।

2. पुरुष व महिलाओं के मध्य संबंध विशेषकर जब वे पति-पत्नियों के रूप में बँधे हों तो वे विवाह से ऊपर आध्यात्मिक भी होते हैं।

3. एक माता एवं उसके बच्चों का संबंध आंगिक एवं आजीवन संबंध है।

4. प्लेटो इस योजना द्वारा एक सम्मानजनक नैतिक संस्था (परिवार) को समाप्त करने की वकालत करता है।

5. प्लेटो अपनी योजना के समर्थन में व्यक्तियों से अत्यधिक आत्मनियंत्रण की मांग करता है जो मुश्किल है। साथ ही वह व्यक्ति को एक साधन बना देता है।

6. प्लेटो कितना ही तार्किक क्यों न हो, मानव जीवन मात्र तर्क से नहीं चल सकता।

अरस्तू प्लेटो की इस योजना का बहुत बड़ा आलोचक है। वह विशेषकर निम्नांकित रूपों में इसकी आलोचना करता है--

1. प्लेटो राज्य की अति एकता पर बल देता है।

2. इससे समाज में विषमताएं ही जन्म लेंगी।

3. सामूहिक बच्चे आवश्यक रूप से उपेक्षित रहेंगे क्योंकि जो वस्तु सबकी होती है वह वास्तव में किसी एक की नहीं होती। यह योजना पूर्णतः अव्यावहारिक है।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 12, December 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1112035 |

4. इस योजना के तहत नजदीकी संबंधियों के मध्य अपवित्र कृत्यों की संभावना बनी रहेगी।

5. इस योजना से संरक्षक वर्ग कभी भी खुश नहीं रह सकते।

6. ऐसी योजना का कोई पूर्व उदाहरण नहीं देखा जा सकता।

7. अरस्तू राज्य को आवश्यक रूप से एक बहुलता मानता है। [4]

निष्कर्ष रूप में इस योजना के बारे में भी यही कहा जाएगा कि प्लेटो के उद्देश्यों में सत्यता हो सकती है पर उसके प्रस्तावों को अपनाने में आपत्ति होगी। यद्यपि यह बात भी ध्यान में रखी जानी चाहिए कि प्लेटो जिस वर्ग के लिए इस योजना को प्रस्तावित करता है उसी वर्ग के लिए वह एक अनिवार्य तथा राज्य नियंत्रित कठोर शिक्षा व्यवस्था को पहले ही बता चुका हैं।

प्लेटो के साम्यवाद की आधुनिक साम्यवाद के साथ तुलना

प्लेटो के साम्यवाद की आधुनिक साम्यवाद से तुलना किए जाने से पूर्व यह आवश्यक है कि आधुनिक साम्यवाद के अर्थ को जान लिया जाए। आधुनिक साम्यवाद का विचार अपने शास्त्रीय रूप में कार्ल मार्क्स के विचारों में परिलक्षित होता है। मार्क्स को वैज्ञानिक समाजवाद का जनक कहा जाता है। उसके विचार से एक शोषणयुक्त समाज में सदैव से दो वर्गों क्रमशः शोषकों एवं शोषितों (जिनके मध्य वह उत्पादन के साधनों के स्वामित्व के आधार पर अंतर करता है) का अस्तित्व रहा है। मार्क्स संपूरण मानव जाति के इतिहास को वर्ग संघर्ष के इतिहास के रूप में दर्शाता है। एक ओर वह अल्पवर्ग है जिसके पास उत्पादन के साधनों का स्वामित्व है, जिसे वह पूँजीपति वर्ग कहता है और दूसरी ओर एक विशाल वर्ग , जिसे वह 'सर्वहारा' की संज्ञा देता है, मजदूरों एवं श्रमिकों का वर्ग है जिसकी एकमात्र शक्ति उसका श्रम है। मार्क्स राज्य को एक ऐसे उपकरण के रूप में देखता है जिसका प्रयोग पूँजीपति वर्ग सर्वहारा के शोषण के लिए करता है उसका उद्देश्य एक 'वर्ग विहीन समाज' की स्थापना करना है जहाँ पर राज्य के लिए कोई स्थान नहीं होगा। अतः यह वर्ग विहीन समाज राज्य विहीन समाज होगा मार्क्स की परिकल्पना में यह सर्वहारा वर्ग द्वारा पूँजीपतियों के विरुद्ध क्रांति के माध्यम से संभव है। मार्क्स के विचारों से प्रभावित होकर सर्वप्रथम लेनिन ने रूस में (1917) समाजवादी क्रांति को करवाने में सफलता प्राप्त की पर ऐसी सफलता एक साम्यवादी दल द्वारा प्राप्त की गयी जिसे लेनिन सर्वहारा के संरक्षक के रूप में आवश्यक मानता था। साम्यवादी दलों द्वारा ऐसी क्रांतियाँ कई अन्य देशों में भी संपन्न हुई। परन्तु कहीं पर भी राज्य की समाप्ति नहीं हो पायी राजनीतिक तंत्र साम्यवादी दलों की तानाशाही व्यवस्थाओं के रूप में स्थापित हुए। बीसवीं सदी के अंतिम दशक में रूस तथा पूर्वी यूरोप की ये सारी साम्यवादी व्यवस्थाएं भह गयीं और आज सिर्फ चीन तथा कतिपय छोटे-छोटे राज्यों में ऐसी व्यवस्थाएं देखी जा सकती हैं।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 12, December 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1112035 |

निष्कर्ष

आधुनिक साम्यवाद का यह परिचय प्लेटो की साम्यवादी योजना के साथ तुलना करने हेतु पर्याप्त है एक विद्वान ने तो यहाँ तक लिखा कि," वस्तुतः समस्त समाजवादियों एवं साम्यवादियों की जड़ें प्लेटो में विद्यमान हैं, परन्तु यह एक अतिशयोक्ति प्रतीत होती है तथापि प्लेटो और आधुनिक साम्यवाद में कतिपय समानताएं ढूंढी जा सकती हैं।

प्लेटो के साम्यवाद और आधुनिक में समानताएं

प्लेटो के साम्यवाद और आधुनिक साम्यवाद मे निम्नलिखित समानताएं हैं--

1. दोनों ही के लिए एक समान आदर्श यह है कि समाज का संगठन सामूहिक सामाजिक सेवाओं के लिए है।

2. दोनों का उद्देश्य समाज की एकता एवं सुदृढ़ता को बनाए रखना है।

3. दोनों ही में किसी समाज में एकाधिक वर्गों के अस्तित्व की परिकल्पना विद्यमान है।

4. दोनों के लिए आर्थिक प्रतिद्वन्द्विता के रूप में एक समान शत्रु को देखा जा सकता।

5. दोनों ही समान रूप से व्यक्ति की वैयक्तिकता की अनदेखी करते हैं और उसे समाज में विलीन कर देते हैं।

6. दोनों ही व्यक्तिगत संपत्ति को एक बुराई के रूप में देखते हैं। अतः उसके अधिकार को स्वीकार नहीं करते।

7. दोनों ही में समाज को एक सम्पूर्णता के रूप में देखा जा सकता है।[9]

प्लेटो के साम्यवाद और आधुनिक साम्यवाद में असमानताएं

प्लेटो के साम्यवाद और आधुनिक साम्यवाद में निम्नलिखित असमानताएं हैं--

1. दोनों की उत्पत्ति का समय तथा इसके विवेचन की परिस्थितियां बिलकुल भिन्न-भिन्न हैं।

2. जहाँ प्लेटो का साम्यवाद उत्पादन की व्यक्तिगत व्यवस्था को प्रभावित नहीं करता आधुनिक साम्यवाद में यह प्रभावित होती हैं।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 12, December 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1112035 |

3. प्लेटो की साम्यवादी योजना में उपभोग की वस्तुएं प्रभावित होती हैं जबकि आधुनिक साम्यवाद में उत्पादन के उपकरण प्रभावित होते हैं।

4. प्लेटो की साम्यवादी योजना एक छोटे से सामाजिक वर्ग के लिए है। अतः यह 'अर्द्ध-साम्यवादी' कही गयी है, पर आधुनिक साम्यवाद की योजना व व्यवस्था सभी पर लागू होती है।

5. प्लेटो के साम्यवाद की योजना का विशुद्धतः एक राजनीतिक उद्देश्य था, जबकि आधुनिक साम्यवाद का उद्देश्य आर्थिक है।

6. प्लेटो की योजना में जिस वर्ग के लिए साम्यवाद की योजना दर्शायी गयी है वह संपत्ति का सामूहिक परित्याग करता है, जबकि आधुनिक साम्यवाद में संपत्ति का सामूहिक रूप से उपयोग किए जाने का प्रावधान है।

7. प्लेटो की योजना प्राचीन यूनानी लघु नगर राज्यों के लिए सुझाई गयी एक योजना है और यह प्लेटो के आदर्श राज्य की प्राप्ति हेतु एक साधन है, जबकि आधुनिक साम्यवाद आधुनिक विशाल राष्ट्रीय राज्यों के संदर्भ में दर्शाया गया विचार है इस विचार का कार्यान्वयन विश्व में कई राज्यों में साम्यवादी क्रांतियों के माध्यम से स्थापित राजनीतिक व्यवस्थाओं के अभ्युदय के रूप में देखा जा सकता है।

8. प्लेटो की योजना अभिजात (कुलीन) वर्गीय साम्यवाद की योजना है जबकि आधुनिक साम्यवाद सर्वहारा का साम्यवाद है।

9. प्लेटो की योजना में परिवार अथवा पत्नियों के साम्यवाद की एक अति विशिष्ट योजना भी प्रस्तावित थी जबकि आधुनिक साम्यवाद में ऐसी कोई योजना नहीं देखी जा सकती।

10. प्लेटो के साम्यवाद की योजना को कभी कार्यरूप में परिणत होते हुए नहीं देखा गया जबकि आधुनिक साम्यवाद के व्यवहारिक प्रयोग को देखा जा सकता है।

विश्व के अन्य देशों में साम्यवादी विचारधारा पर उपर्युक्त विचार परिवर्तन का गहरा प्रभाव पड़ा है। टीटो के विद्रोह के बाद पूर्व यूरोप के अन्य साम्यवादी देशों ने भी सोवियत प्रभाव से स्वतंत्र होने का प्रयत्न किया है। रूसी साम्यवादी ख्रुश्चेव के संशोधनों को अस्वीकार करते हैं और सोवियत तथा चीन के बीच सैद्धांतिक ही नहीं सैन्य संघर्ष भी विकट रूप धारण करता जा रहा है। संसार के लगभग सभी साम्यवादी दल सोवियत और चीनी विचारधाराओं के आधार पर विभक्त होते जा रहे हैं कुछ विचारक राष्ट्रीय साम्यवादी दलों की सैद्धांतिक और संगठनात्मक स्वतंत्रता पर भी जोर देते हैं। इस प्रकार साम्यवादी विचारों और आंदोलन की एकता और अंतरराष्ट्रीयता का ह्रास हो रहा है।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 12, December 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1112035 |

प्रथम महायुद्ध के बाद साम्यवाद की ही नहीं लोकतंत्रात्मक समाजवाद की भी प्रगति हुई है। दो महायुद्धों के बीच ब्रिटेन में अल्पकाल के लिए दो बार मजदूर सरकारें बनीं। प्रथम महायुद्ध के बाद जर्मनी और आस्ट्रिया में समाजवादी शासन स्थापित हुए; फ्रांस और स्पेन आदि देशों में समाजवादी दलों की शक्ति बढ़ी। परंतु शीघ्र ही इनकी प्रतिक्रिया भी आरंभ हुई। सन् 1922 में बेनिटो मुसोलिनी ने इटली में फासिस्ट शासन स्थापित किया। फासिज्म मजदूर और समाजवादी आंदोलनों का शत्रु और युद्ध और साम्राज्यवाद का समर्थक है। वह पूँजीवादी व्यवस्था का अंत नहीं करता। नात्सीवाद के मूल सिद्धांत फासिज्म से मिलते जुलते हैं। इस विचारधारा का प्रचारक एडोल्फ हिटलर था। सन् 1929 के आर्थिक संकट के बाद सन् 1932 में जर्मनी में नात्सी शासन स्थापित हो गया और बाद में इस विचारधारा का प्रभाव स्पेन, आस्ट्रिया, चेकोस्लोवाकिया, पोलैंड और फ्रांस आदि देशों में फैल गया।

द्वितीय महायुद्ध के बीच फासीवादी विचारों का ह्रास तथा समाजवादी विचारों और आंदोलनों की प्रगति हुई है। पूर्वी यूरोप के साम्यवादी शासनों के अतिरिक्त पश्चिमी यूरोप में कुछ काल के लिए कई देशों में समाजवादी और साम्यवादी दलों के सहयोग से सम्मिलित शासन बने। यूरोप के कुछ अन्य देशों जैसे (ब्रिटेन, स्वीडन, नार्वे, फिनलैंड) तथा आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड आदि देशों में समय समय पर समाजवादी सरकारें बनती रही हैं। इस काल में एशिया, अफ्रीका और लातीनी अमरीका के देशों में भी समाजवादी शासन स्थापित हो चुके हैं। इनमें चीन, बर्मा, सिंगापुर, घाना और क्यूबा मुख्य हैं।[10]

संदर्भ

1. साम्यवाद भूमिका
2. समाजवाद के आधुनिक रूप
3. "ब्रुसेल्स में साम्यवाद और फ़ासीवाद की तुलना को रूस ने बेहयाई बताया"
4. भाषा विज्ञान, डा० भोलानाथ तिवारी, किताब महल, दिल्ली, पन्द्रहवाँ संस्करण- १९८१, पृष्ठ ४८१
5. प्लेटो का काव्यसिद्धान्त और अनुकरण सिद्धान्त
6. Plato, the Ulan and His Work, (New York, The Diar-Press-;-Inc., 1936).
7. Report of the Work of the Central Committee of the Communist Party of the Soviet Union," in International Conciliation (Worcester, Mass., Carnegie Endowment for International Peace, No. 305, Dec., 1934).
8. The Theory of Education in the Republic 01' Plato TChicago, Universlty Pre_ss, -rno6).
9. "Plato and the Absolute State, 11 in The Modern Schoolman, (St. Louis University, Vol. XVI, No. 1, Nov. 1938).
10. Summary and Analysis of the Dialogues of Plato (London, George-Bell and Sons, 1892).

INNO SPACE

SJIF Scientific Journal Impact Factor

Impact Factor: 8.118

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

Scan to save the contact details

www.ijirset.com